वर्ष-10, अंक 87 पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुयये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज शनिवार 08 जून, 2024

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

टीडीपी की जीत के बाद आंध्र प्रदेश में भय का माहौल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
अमरावती। प्रमुख वाई एस जगन मोहन रेड्डी ने गुरुवार को टीडीपी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राज्य में सरकार बनाने

से पहले ही टीडीपी के कार्यकर्ताओं ने आंध्र प्रदेश में भय का माहौल बना दिया है। जगन मोहन रेड्डी ने उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर हो रहे हमले को रोकने के लिए राज्यपाल से हस्तक्षेप करने की अपील की प्रमुख वाई एस जगन मोहन रेड्डी ने गुरुवार को टीडीपी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राज्य में सरकार बनाने से पहले ही टीडीपी के कार्यकर्ताओं ने आंध्र प्रदेश में भय का माहौल बना दिया है। जगन मोहन रेड्डी ने उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर हो रहे हमले को रोकने के लिए राज्यपाल से हस्तक्षेप करने की अपील की मालूम हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी, टीडीपी और जनसेना ने एक साथ मिलकर चुनाव लड़ा था और एनडीए के हाथों करारी हार के बाद जगन मोहन रेड्डी ने आरोप लगाया कि टीडीपी कार्यकर्ता राज्य में लगातार उत्पाद मचा रहे हैं और उनकी पार्टी भ्रेंण्झ् के कार्यकर्ताओं पर हमला कर रहे हैं और उनको लगातार निशाना बना रहे हैं कार्यवाहक सीएम ने अपने एक्स पोस्ट पर लिखा कि राज्य में निजी और सरकारी संपत्तियों को नष्ट किया जा रहा है।

क्या आंध्र प्रदेश और बिहार को मिलेगा विशेष राज्य का दर्जा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। देश में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने जा रही है। लोकसभा चुनाव 2024 में बीजेपी को 240 सीटें मिली

हैं। लेकिन इस बार की राह बीजेपी के लिए इतनी आसान नहीं है। कई बड़े राज्यों में भाजपा की सीटों में कमी आई है। इसी के चलते भाजपा को अकेले दम पर बुहमत नहीं मिल सका और वो अब एनडीए के बलबूते पर सरकार बनाने जा रही है। बता दें कि आंध्र प्रदेश और बिहार में 16 और 12 सीटें जीतने वाली चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी और नीतीश कुमार की जेडी (यू) अन्य गठबंधन सहयोगियों के समर्थन से एनडीए ने बहुमत का आंकड़ा पाया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने निशाना साधते हुए कहा बार-बार दावा किया जा रहा है कि मोदी 3.0 सरकार बनेगी लेकिन सच्चाई यह है कि इस बार मोदी 1/3 सरकार बनेगी। साथ ही इस दौरान जयराम रमेश ने आंध्र प्रदेश और बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने वाली बात भी उठाई। अब कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है।

सरकार बनाने का दावा पेश कर सकते हैं नरेंद्र मोदी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय

जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) आज संसद के केंद्रीय कक्ष में अपने नवनिर्वाचित सांसदों की बैठक आयोजित करने वाला है। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में महागठबंधन की ओर से सरकार बनाने पर चर्चा होगी। 2024 के लोकसभा चुनावों में एनडीए ने 293 सीटें जीतकर बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। हालाँकि, भाजपा केवल 240 सीटें हासिल करने में सफल रही, जो 2019 की तुलना में बहुत कम है। भाजपा के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) आज संसद के केंद्रीय कक्ष में अपने नवनिर्वाचित सांसदों की बैठक आयोजित करने वाला है। सूत्रों के मुताबिक बैठक में महागठबंधन की ओर से सरकार बनाने पर चर्चा होगी। 2024 के लोकसभा चुनावों में एनडीए ने 293 सीटें जीतकर बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। भाजपा केवल 240 सीटें हासिल करने में सफल रही। इससे पहले बुधवार को एनडीए में शामिल दलों के नेताओं ने बैठक की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सर्वसम्मति से अपना नेता चुना। पीएम मोदी ने बाद में कहा कि हमारे मूल्यवान एनडीए सहयोगियों से मुलाकात हुई। एनडीए विकसित भारत के निर्माण की दिशा में काम करेगा। बुधवार की बैठक में ही सहयोगी दलों को यह बता दिया गया था कि मंत्रिमंडल में बंटवारे को लेकर ऐसा फार्मूला तैयार कर लिया जाएगा जिस पर सहमति होगी। अपुष्ट सूत्रों के अनुसार, किसी नंबर फार्मूले की बजाय सभी सहयोगी दलों को उचित प्रतिनिधित्व देने की योजना है। ऐसे में जिस दल के पास पांच तक सदस्य है उन्हें एक मंत्री पद और उनसे ज्यादा वाले जदयू और तेदेपा को तीन तीन मंत्री पद दिया जा सकता है। हालांकि, इस बात की अटकलें तेज चलती रही कि इन दलों की ओर से चार मंत्री पद मांगा गया है और तेदेपा की ओर से लोकसभा अध्यक्ष की कुर्सी भी मांगी गई है। इन मांगों को दोनों दलों में से किसी ने भी औपचारिक रूप से नहीं बताया है। भाजपा सूत्रों के अनुसार भी अभी तक इन दलों की ओर से कोई मांग नहीं रखी गई है। शपथ ग्रहण समारोह को लेकर गुरुवार को भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर भी लंबी बैठक हुई। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद थे।

एनडीए की बैठक में शामिल हों सभी टीडीए सांसद', चंद्रबाबू नायडू ने दिया सभी टीडीए सांसदों को निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
अमरावती। तेलुगू देशम पार्टी (ऊअइ) सुप्रीमो एन. चंद्रबाबू नायडू ने गुरुवार को पार्टी के सभी सांसदों को शुक्रवार सात जून को दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (ऊँ) की बैठक में शामिल होने का निर्देश दिया द प्रमुख नायडू ने गुरुवार को गुंटूर जिले में उंदावल्ली स्थित आवास मौजूदा सांसदों के साथ बैठक की। छह से अधिक सांसद बैठक में व्यक्तिगत रूप से शामिल हुए और शहर से बाहर गए अन्य सांसद ऑनलाइन जुड़े। इस दौरान नायडू ने चुनाव में जीत दर्ज करने पर सांसदों को बधाई दी और कहा कि सभी गुरुवार रात तक राष्ट्रीय राजधानी पहुंचें।ने आंध्र प्रदेश में अकेले 16 लोकसभा

सीटें जीती हैं। वहीं भाजपा, तेदेपा और जनसेना के गठबंधन ने राज्य की 25 में से 21 सीटों पर कब्जा जमाया है। प्रमुख नायडू ने गुरुवार को गुंटूर जिले में उंदावल्ली स्थित आवास मौजूदा सांसदों के साथ बैठक की। छह से अधिक सांसद बैठक में व्यक्तिगत रूप से शामिल हुए और शहर से बाहर गए अन्य सांसद ऑनलाइन जुड़े।इस दौरान नायडू ने चुनाव में जीत दर्ज करने पर सांसदों को बधाई दी और कहा कि सभी गुरुवार रात तक राष्ट्रीय राजधानी पहुंचें। राजग ने आंध्र प्रदेश में 164 विधानसभा और 21 लोकसभा सीटों के साथ भारी बहुमत से जीत हासिल की है और यही कारण है कि नायडू राष्ट्रीय राजनीति में किंगमेकर की भूमिका में उभरे हैं।

चुनाव आयोग ने राष्ट्रपति मुर्मु को सौंपी नवनिर्वाचित लोकसभा सांसदों की लिस्ट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार, चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और डॉ. सुखबीर सिंह संधू

ने गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने 18वीं लोकसभा के गठन की प्रक्रिया शुरू करने के लिए नव निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौंपी। अब राष्ट्रपति नई सरकार के गठन की औपचारिक प्रक्रिया शुरू करेंगी। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और डॉ. सुखबीर सिंह संधू ने गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने 18वीं लोकसभा के गठन की प्रक्रिया शुरू करने के लिए नव निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौंपी। अब राष्ट्रपति नई सरकार के गठन की औपचारिक प्रक्रिया शुरू करेंगी। राष्ट्रपति मुर्मु ने चुनावी प्रक्रिया की सफलता पर मुख्य चुनाव आयुक्त को बधाई दी। राष्ट्रपति मुर्मु ने चुनावी प्रक्रिया की सफलता पर मुख्य चुनाव आयुक्त को बधाई दी। मतदान के प्रबंधन में शामिल आयोग, उसके अधिकारियों और कर्मचारियों व अन्य अधिकारियों के प्रयासों की राष्ट्रपति ने सराहना की। उन्होंने स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने में पुलिस और सुरक्षा कर्मियों के प्रयासों की भी प्रशंसा की। राष्ट्रपति मुर्मु ने बड़ी संख्या में चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने वाले लाखों मतदाताओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह हमारे संविधान और भारत की गहरी और अटल लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप है। गौरतलब है कि राष्ट्रपति मुर्मु ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल की सलाह पर बुधवार को 17वीं लोकसभा भंग कर दी थी। मौजूदा लोकसभा का कार्यकाल 16 जून को खत्म हो रहा है और उससे पहले नई सरकार का गठन करना होगा। भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने हाल ही में संपनन्‍ आम चुनावों में बहुमत हासिल किया है। जहां राजग 543 सदस्यीय लोकसभा में 293 सीटें जीतकर 272 के बहुमत के आंकड़े से ऊपर है, वहीं 240 सीटें जीतने वाली भाजपा 2014 के बाद पहली बार पूर्ण बहुमत से पीछे रह गई है। विपक्षी गठबंधन आईएनडीआईए ने 234 सीटें जीती हैं।

मानहानि मामले में बेंगलुरु कोर्ट में आज पेश होंगे राहुल गांधी, इस मामले में भाजपा ने दायर किया था केस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
बेंगलुरु। कांग्रेस नेता राहुल गांधी मानहानि मामले में शुक्रवार को विशेष अदालत में पेश होंगे। उनके खिलाफ मुख्यधारा के समाचार पत्रों में अपमानजनक विज्ञापन जारी करने पर कर्नाटक भाजपा ने मामला दायर कराया था। कांग्रेस नेता राहुल गांधी मानहानि मामले में शुक्रवार को विशेष अदालत में पेश होंगे। उनके खिलाफ मुख्यधारा के समाचार पत्रों में अपमानजनक विज्ञापन जारी करने पर कर्नाटक भाजपा ने मामला दायर कराया था। राज्य कांग्रेस ने गुरुवार को बताया कि राहुल गांधी शुक्रवार सुबह साढ़े दस बजे सिटी सिवल कोर्ट में उपस्थित होंगे। इसके बाद राहुल गांधी राज्य से कांग्रेस के नवनिर्वाचित सांसदों और हारे हुए उम्मीदवारों से बातचीत करेंगे। गत वर्ष विधानसभा चुनाव से पहले दिए

गए विज्ञापन में राज्य की तत्कालीन भाजपा सरकार पर 21019-2023 के शासन में बड़े पैमाने में भ्रष्टाचार में लिप्त होने का आरोप लगाया गया था। राज्य कांग्रेस ने गुरुवार को बताया कि राहुल गांधी शुक्रवार सुबह साढ़े दस बजे सिटी सिवल कोर्ट में उपस्थित होंगे। इसके बाद वह क्वींस रोड पर भारत जोड़ो भवन में राज्य से कांग्रेस के नवनिर्वाचित सांसदों और हारे हुए उम्मीदवारों से बातचीत करेंगे। इस दौरान मुख्यमंत्री सिद्दरमैया और उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार भी मौजूद रहेंगे। मानहानि मामले में एक जून को कोर्ट ने सिद्दरमैया और शिवकुमार को जमानत दे दी थी। वहीं जस्टिस केएन शिवकुमार ने राहुल गांधी को सात जून को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का आदेश दिया था। गत सप्ताह मामले की सुनवाई के दौरान गांधी के अधिवक्ता ने अपने मुवक्किल के लिए उपस्थिति से छूट के आवेदन दिया था। हालांकि शिकायतकर्ता पक्ष ने विरोध करते हुए दलील दी थी कि छूट की अनुमति बार-बार नहीं दी जानी चाहिए।

मणिपुर में हिंसा बढ़ाने की अंतरराष्ट्रीय साजिश का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

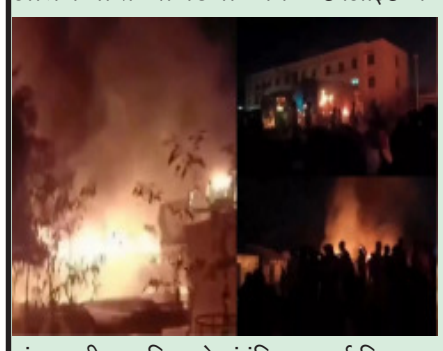

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। एनआईए ने गुरुवार को मणिपुर में हिंसा बढ़ाने और पूवीत्तर राज्य में आतंक फैलाने के लिए रची गई उग्रवादियों और आतंकवादी संगठनों की

अंतरराष्ट्रीय साजिश से संबंधित एक मामले में इंफाल हवाई अड्डे से एक प्रमुख आरोपित को गिरफ्तार किया है। एनआईए ने गुरुवार को मणिपुर में हिंसा बढ़ाने और पूवीत्तर राज्य में आतंक फैलाने के लिए रची गई उग्रवादियों और आतंकवादी संगठनों की अंतरराष्ट्रीय साजिश से संबंधित एक मामले में इंफाल हवाई अड्डे से एक प्रमुख आरोपित को गिरफ्तार किया है। एनआईए की जांच के अनुसार यह साजिश कुकी और जोमी विद्रोहियों ने रची थी और उन्हें पूवीत्तर राज्यों एवं पड़ोसी म्यांमार में स्थित आतंकवादी संगठनों का समर्थन प्राप्त था। एनआइए ने बताया कि कुकी नेशनल फ्रंट-मिलिट्री काउंसिल के सदस्य थोंगमिनथांग हाओकिप उर्फ थांगबोई हाओकिप उर्फ रोजर को पिछले साल 19 जुलाई को एनआइए द्वारा स्वतः संज्ञान लेकर दर्ज किए गए मामले में गिरफ्तार किया गया है। एनआईए की जांच के अनुसार, यह साजिश कुकी और जोमी विद्रोहियों ने रची थी और उन्हें पूवीत्तर राज्यों एवं पड़ोसी म्यांमार में स्थित आतंकवादी संगठनों का समर्थन प्राप्त था। इस साजिश का उद्देश्य क्षेत्र में मौजूदा जातीय अशांति का फायदा उठाना और हिंसक हमलों के जरिए भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ना था।

कांग्रेस की कार्य समिति चुनाव परिणामों पर करेगी चर्चा, बैठक में गांधी परिवार होगा शामिल; खरगे करेंगे अध्यक्षता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव परिणामों पर चर्चा करने के

लिए आठ जून को कार्य समिति की बैठक बुलाई है। कांग्रेस मुख्यालय पर शनिवार सुबह 11 बजे आयोजित होने वाली बैठक की अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे करेंगे। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव परिणामों पर चर्चा करने के लिए आठ जून को कार्य समिति की बैठक बुलाई है। कांग्रेस मुख्यालय पर शनिवार सुबह 11 बजे आयोजित होने वाली बैठक की अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे करेंगे। सोनिया गांधी राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा समेत शीर्ष कांग्रेस नेता इस विचार-विमर्श में भाग लेंगे। इस चुनाव में कांग्रेस दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा समेत शीर्ष कांग्रेस नेता इस विचार-विमर्श में भाग लेंगे। इस चुनाव में कांग्रेस दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। उसने 2019 की 52 सीटों की तुलना में इस बार 99 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज की है। 10 साल के लंबे अंतराल के बाद कांग्रेस के पास लोकसभा में विपक्ष के नेता का पद होगा। 2014 और 2019 में सदन में आवश्यक 10 प्रतिशत सीटें भी न होने के कारण वह यह पद नहीं पा सकी थी।

'पीएम मोदी को हमारा बिना शर्त समर्थन', चिराग पासवान ने एनडीए के साथ को लेकर क्या किया खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक

गठबंधन की जीत पीएम मोदी के नेतृत्व की जीत है। इस कारण लोक जनशक्ति पार्टी-रामविलास (लोजपा-रामविलास) ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बिना शर्त समर्थन किया है। यह बात गुरुवार लोजपा-रामविलास प्रमुख चिराग पासवान ने कही। लोजपा-रामविलास प्रमुख चिराग पासवान ने पत्रकार वार्ता में कहा कि हमने बुधवार को राजग की बैठक में पीएम मोदी और उनके नेतृत्व को अपना समर्थन दिया। हमने बिना शर्त उनके नेतृत्व को स्वीकार किया। उनके नेतृत्व के कारण ही राजग को जीत मिली। उन्होंने कहा लोकसभा चुनाव में भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की जीत पीएम मोदी के नेतृत्व की जीत है। उन्होंने पत्रकार वार्ता में कहा कि हमने बुधवार को राजग की बैठक में पीएम मोदी और उनके नेतृत्व को अपना समर्थन दिया। हमने बिना शर्त उनके नेतृत्व को स्वीकार किया। उनके नेतृत्व के कारण ही ऊँ को जीत मिली गत बुधवार को भाजपा नीत गठबंधन के नेताओं ने पीएम मोदी को निर्विरोध सत्तारूढ़ दल का नेता चुना।

सीआरपीएफ के 85 साल के इतिहास में पहली बार हुआ ये काम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। देश के सबसे बड़े अर्धसैनिक बल केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कुल 2,600 खानसामों और जल वाहकों को पदोनन्त किया गया है। ऐसा 85 वर्ष के इतिहास में पहली बार

हुआ है।सीआरपीएफ की स्थापना 1939 में हुई थी। इसके पास दो विशेष वर्ग के कुल 12,250 कर्मी हैं जो बल के लगभग 3.25 लाख पुरुष एवं महिला कर्मियों के लिए रसोई, कैंटीन और अन्य प्रशासनिक कार्यों के एक बहुत बड़े नेटवर्क को संभालते हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार एक आदेश के जरिये 1700 खानसामों और 900 जलवाहक कर्मियों को उनके कांस्टेबल पद से पदोनन्त कर हेड कांस्टेबल नियुक्त किया गया है। सीआरपीएफ के 85 वर्ष के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है। 2016 में जब केंद्र सरकार ने सातवें वेतन आयोग की सिफारिशें लागू की थीं तब उन्हें कुक और वाटर करियर का विशिष्ट काडर नाम दिया गया था। एक अन्य अधिकारी ने कहा कि इन कर्मियों को पदानुक्रम में सबसे निचले पायदान पर भर्ती किया गया था। इन्हें कभी पदोनन्त नहीं किया गया और औसतन लगभग 30-35 वर्षों की सेवा के बाद भी वे उसी पद से सेवानिवृत्त होते थे। खानसामें और जलवाहक कर्मी किसी भी बल के संचालन का एक अनिवार्य हिस्सा होते हैं। सीआरपीएफ के प्रत्येक बटालियन में करीब 45 ऐसे कर्मी हैं। उन्होंने बताया कि सीआरपीएफ ने इन कर्मियों को पदोनन्त करने के संबंध में एक प्रस्ताव तैयार किया था। इसे बाद में गृह मंत्रालय ने मंजूरी दी थी। इस आदेश के तहत पदोनन्त किए गए 2,600 कर्मियों की भर्ती 1983 से 2004 के बीच की गई थी।

दबंगों की पिटाई से घायल चना विक्रेता की मौत, प्रयागराज ले जाते समय रास्ते में थम गईं सांसें

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। अंतू थाना क्षेत्र के जोगीपुर बहेरा निवासी बद्री प्रसाद जो कि बाबूगंज बाजार में ठेले पर घूम कर चना बेचने का कार्य करता है। उसका अपने गांव के ही लोगों से काफी दिनों से रंजिश चल रही है। बृहस्पतिवार की शाम वह ठेले पर कच्चा चना रखकर बेचने के लिए पैदल जा रहा था। दबंगों की पिटाई से अधमरा हुए चना विक्रेता की एसआरएन अस्पताल प्रयागराज ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। अंतू थाना क्षेत्र के जोगीपुर बहेरा निवासी बद्री प्रसाद जो कि बाबूगंज बाजार में ठेले पर घूम कर चना बेचने का कार्य करता है। उसका अपने गांव के ही लोगों से काफी दिनों से रंजिश चल रही है। बृहस्पतिवार की शाम वह ठेले पर कच्चा चना रखकर बेचने के लिए पैदल जा रहा था। घर से करीब 200 मीटर दूर ही पहुंचा था कि उसके गांव के रहने वाले ननन्नू ,रमेश, रोहित, सुरेश, निखिल, गुनेश ने उसे रोक लिया। आरोप है कि दबंगों ने पिटाई करते हुए उसको अधमरा कर दिया। ग्रामीणों के पहुंचने पर आरोपी भाग निकले। गंभीर हालत में बद्री को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। हालत नाजुक होने पर रात में ही उसे प्रयागराज के एसआरएन अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। प्रयागराज पहुंचने से पहले ही उसकी सांसें थम गईं। पतने अमरावती की तहरीर पर पुलिस ने ननन्नू, रमेश, रोहित, सुरेश, निखिल, गुनेश एवं उनके साथी भवानीपुर निवासी रमेश वर्मा के विरुद्ध हत्या सहित विभिनन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।

मंदिर के बाहर पूजा कर रही वृद्धा को तेज रफ्तार कार ने रौंदा, चालक समेत वाहन को पुलिस ने पकड़ा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। लोगों की चीख पुकार पर कार को रोका गया और कार के नीचे फंसी महिला को बाहर निकाला गया। उसे एक अस्पताल में ले जाया गया, जहां उसको मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस चालक समेत कार को हिरासत में ले लिया है। शहर के कीडगंज मुहल्ले में तेज रफ्तार कार की चपेट में आने से सड़क किनारे पूजा कर रही एक वृद्ध महिला की मौत हो गई। कार की रफ्तार इतनी तेज थी की वह महिला को रौंदते हुए आगे निकल गई। लोगों की चीख पुकार पर कार को रोका गया और कार के नीचे फंसी महिला को बाहर निकाला गया। उसे एक अस्पताल में ले जाया गया, जहां उसको मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस चालक समेत कार को हिरासत में ले लिया है। कीडगंज की रहने वाली बीना शर्मा (75) मुहल्ले के ही भार्गव बूथ के पास बीच वाली सड़क पर स्थित मंदिर के बाहर पूजा कर रही थीं। इसी दौरान तेज रफ्तार एमजी हेक्टर कार ने उन्हें रौंद दिया। महिला वाहन में ही फंस गई। कार मालिक ही वाहन चला रहा था। वह मृतका के घर के पास ही रहता है। घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने कीडगंज पुलिस चौकी के पास चक्काजाम शुरू कर दिया। बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स मौके पर तैनात है।

राजकीय इंटर कॉलेजों में प्रिंसिपल के 554 पद खाली, वरिष्ठता के विवाद में फंसी भर्ती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रदेश में जीआईसी है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) से इन पदों के लिए बना पाए हैं। हाईस्कूल में राजकीय उच्चतर माध्यमिक

प्रिंसिपल के 945 पद हैं। इसमें से सीधी भर्ती के जरिए 430 पदों को भरने का प्रावधान है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) से इन पदों के लिए भर्ती होती है। समय- समय पर यह भर्ती हुई है। इसलिए इस कटेगरी के 313 पद भरे हैं और 117 पद खाली हैं। प्रदेश भर के 554 राजकीय इंटर कॉलेजों में प्रिंसिपल के पद खाली हैं। इन पदों को भरने के लिए शासन स्तर से पहल नहीं की जा रही है। इसमें से अधिकतर पद पदोननति से भरे जाने हैं। लेकिन उसके लिए करीब आठ वर्ष से डिपार्टमेंटल प्रमोशन कमेटी (डीपीसी) की बैठक नहीं हुई है। ऐसे में इन विद्यालयों में शिक्षण व्यवस्था बेपटरी है और प्रभारी के भरोसे प्रशासनिक कार्य संचालित किए जा रहे हैं। प्रदेश में जीआईसी प्रिंसिपल के 945 पद हैं। इसमें से सीधी भर्ती के जरिए 430 पदों को भरने का प्रावधान है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) से इन पदों के लिए भर्ती होती है। समय- समय पर यह भर्ती हुई है। इसलिए इस कटेगरी के 313 पद भरे हैं और 117 पद खाली हैं। प्रदेश भर के 554 राजकीय इंटर कॉलेजों में प्रिंसिपल के पद खाली हैं। इन पदों को भरने के लिए शासन स्तर से पहल नहीं की जा रही है। इसमें से अधिकतर पद पदोननति से भरे जाने हैं। लेकिन उसके लिए करीब आठ वर्ष से डिपार्टमेंटल प्रमोशन कमेटी (डीपीसी) की बैठक नहीं हुई है। ऐसे में इन विद्यालयों में शिक्षण व्यवस्था बेपटरी है और प्रभारी के भरोसे प्रशासनिक कार्य संचालित किए जा रहे हैं। प्रदेश में जीआईसी प्रिंसिपल के 945 पद हैं। इसमें से सीधी भर्ती के जरिए 430 पदों को भरने का प्रावधान है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) से इन पदों के लिए भर्ती होती है। समय- समय पर यह भर्ती हुई है। इसलिए इस कटेगरी के 313 पद भरे हैं और 117 पद खाली हैं। दूसरी ओर से जीआईसी के सहायक अध्यापकों और प्रवक्ताओं को पदोननति देकर प्रिंसिपल के 515 पदों को भरना था पदोननति के लिए वरिष्ठता सूची बनी लेकिन वह विवादित हो गई है। इसलिए आठ वर्ष से डीपीसी की प्रक्रिया नहीं हो सकी है। वरिष्ठता सूची के विवाद को अफसरों ने नहीं सुलझाया। इसलिए यह मामला कोर्ट तक पहुंच गया। डीपीसी न होने के कारण पदोननति से भरे जाने वाले प्रिंसिपल के पदों में से 437 पद खाली हैं। यह विद्यालय प्रभारी प्रिंसिपल के भरोसे चल रहे हैं। स्थायी प्रिंसिपल न होने से शिक्षण कार्य पर असर पड़ रहा है।स्थायी प्रिंसिपल न होने से पठन पाठन प्रभावित हुआ है। 2024 की यूपी टॉपर लिस्ट में जीआईसी के सिर्फ तीन विद्यार्थी ही जगह विद्यालय रामनगर भदोही के देवेश कुमार कनौजिया नौवें स्थान पर रहे। वहीं जीआईसी मैनपुरी के मोहम्मद शाहिद चौथे और जीजीआईसी चरखारी महोबा की सोनाली वर्मा सातवें स्थान पर रही। राजकीय शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वर पांडेय ने बताया कि एलटी से प्रवक्ता के लिए 10 विषयों में 14 वर्ष से पदोननति नहीं हुई है। एडी, जेडी और डीआईओएस की लापरवाही से यह प्रक्रिया लंबित है। कहा कि अफसरों और निदेशालय के लिपिकों ने वरिष्ठता सूची में गड़बड़ी की। इससे मामला कोर्ट गया और फैसला न होने से पदोननति रुक गई है। इसके अलावा शिक्षकों की कई अन्य समस्याएं है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं को लेकर उनका संगठन 10 जून से निदेशालय में प्रदर्शन करेगा।

दक्षिण भारत से आने वाली कई ट्रेनें रहेंगी निरस्त, तीसरी लाइन के कार्य के चलते लिया गया निर्णय

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। इससे 37 यात्री ट्रेनों को निरस्त किया गया है। इनमें कुछ प्रयागराज जंक्शन एवं प्रयागराज छिवकी होकर चलती है। इन प्रमुख ट्रेनों में प्रयागराज-बंगलूरू और सूबेदारगंज-सिकंदाराबाद स्पेशल भी शामिल है। दक्षिण भारत से प्रयागराज की ओर आने वाली कई ट्रेनें अगली कुछ तिथियों में निरस्त रहेंगी। रेलवे की ओर से सिंकदराबाद मंडल स्थित काजीपेट-बल्हारशाह खंड के आसिफाबाद रोड-रेचनी रोड के मध्य तीसरी लाइन की कमीशनिंग के लिए नॉन इंटरलॉकिंग आदि का कार्य करेगा। इससे 37 यात्री ट्रेनों को निरस्त किया गया है। इनमें कुछ प्रयागराज जंक्शन एवं प्रयागराज छिवकी होकर चलती हैं। इन प्रमुख ट्रेनों में प्रयागराज-बंगलूरू और सूबेदारगंज-सिकंदाराबाद स्पेशल भी शामिल है।

रेलवे के खोदे गए गड्ढे में गिरकर 25 भेड़ों की मौत, भेड़ पालक परिवार को लाखों का नुकसान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। घूरपुर क्षेत्र के पिपिरसा और भड़रा गांव के बीच रेलवे के द्वारा खोदे गए गड्ढे में गिरकर दो दर्जन से अधिक भेड़ों की मौत हो गई। भेड़ पालक चराने के बाद भेड़ों को घर ला रहा था। आगे चल रही एक भेड़ गड्ढे में गिर गई, जब तक वह बाहर निकलती तब तक पीछे चल रही बड़ी संख्या में भेड़ें अपने स्वभाव के चलते गड्ढे में कूदती चली गईं। घूरपुर क्षेत्र के पिपिरसा और भड़रा गांव के बीच रेलवे के द्वारा खोदे गए चार फीट के गड्ढे में गिरकर 25 भेड़ों की मौत हो गई। हादसा उस समय हुआ जब भेड़ पालक चराने के बाद भेड़ों को लेकर घर लौट रहा था। आगे चल रही एक भेड़ गड्ढे में गिर गई। वह बाहर निकलने का प्रयास कर ही रही थी कि उसके पीछे चल रहीं करीब 25 भेड़ें अपने स्वभाव के चलते उसी गड्ढे में कूदती चली गईं, जिससे एक दूसरे से दबकर 25 भेड़ों की मौत हो गई। इससे भेड़ पालक परिवार में मातम छा गया गया। उसकी आय का मुख्य साधन यही है। पिपिरसा गांव निवासी छोटेलाल पाल भेड़ पालक है। उन्होंने घर पर ही सवा सौ भेड़ें पाल रखी है, जिनकी देखरेख पूरा परिवार मिलजुलकर करता है। बुधवार को छोटेलाल अपने बेटे इंद्रपाल के साथ भेड़ों को चराने ले गए थे।

ट्रक से टकराने के बाद आग का गोला बनी बाइक, वाहन में फंसा रहा युवक; तड़पकर हुई मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

आजमगढ। ट्रक से टक्कर होने के साथ ही बाइक में आग लग गई।

बाइक राइडर खुद को बाइक से अलग नहीं कर सका, जिसके कारण वह भी बाइक के साथ जलने लगा। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी होते ही अहरौला थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई है और छानबीन में जुट गई है।आजमगढ़ के पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर शुक्रवार की दोपहर आजमगढ़ से लखनऊ तीव्र गति से जा रहे बाइक राइडर की बाइक एक ट्रक से टकरा गई। बाइक के टकराते ही उसमें आग पकड़ ली। जब तक लोगों को इसकी जानकारी होती मौके पर ही बाइक राइडर की बाइक के साथ जलकर मौत हो गई। गाजीपुर से लखनऊ को जाने वाले पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर दुर्घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। शुक्रवार की दोपहर पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर एक बाइक राइडर तेजी से लखनऊ की ओर से जा रहा था। जैसे ही वह पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के 197.2 किमी पर पहुंचा, उसकी बाइक की ट्रक से टक्कर हो गई।

सड़क हादसे में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर समेत तीन की मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। हादसे में उनके पिता एवं रिटायर्ड इंजीनियर सुरेंद्र प्रसाद सिंह और ममेरे भाई भोला सिंह की भी मौत हो गई। झारखंड से बिहार आते वक्त यह हादसा हुआ। वह प्रयागराज में बैंक रोड स्थित टीचर्स कॉलोनी में रहते थे। 43 वर्षीय डॉ. अनूप अपने पीछे पतने और दो बेटियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) के अर्थशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनूप कुमार का बृहस्पतिवार को सड़क हादसे में निधन हो गया। दुर्घटना में उनके पिता एवं रिटायर्ड इंजीनियर सुरेंद्र प्रसाद सिंह और ममेरे भाई भोला सिंह की भी मौत हो गई। झारखंड से बिहार आते वक्त यह हादसा हुआ। वह प्रयागराज में बैंक रोड स्थित टीचर्स कॉलोनी में रहते थे। 43 वर्षीय डॉ. अनूप अपने पीछे पतने और दो बेटियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए है। डॉ. अनूप बिहार के औरंगाबाद जिले के मदनपुर थाना क्षेत्र के घोस्ता गांव के रहने वाले थे। इविवि में वह अर्थशास्त्र के शिक्षक थे। 11 साल पहले उन्हें विश्वविद्यालय में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर ज्वाइन किया था।

108 महिलाओं ने निकाली कलशयात्रा, बही श्रीरामकथा की गंगा; नौ दिवसीय कथा का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। यात्रा जैतपुरा, नागकुआं, डिगिया प्लॉट, राजापुरा, गोपालबाग कॉलोनी होते हुए पुनः मंदिर पहुंची, जहां पर कलश पूजन के बाद स्थापना हुई। शाम को कथा का शुभारंभ काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास के अध्यक्ष प्रो. नागेंद्र पांडेय, जगदीश दास महाराज, अवध किशोर दास महाराज, मंदिर के महंत वागेश्वरी मिश्रा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। अखिल भारतीय सनातन न्यास की ओर से गुरुवार को जैतपुरा स्थित बागेश्वरी देवी मंदिर से गाजेबाजे के साथ कलश शोभायात्रा निकाली गई। इसके साथ ही मंदिर परिसर में नौ दिवसीय नवाह्न पारायण एवं श्रीरामकथा का शुभारंभ हुआ। पातालपुरी मठ के पीठाधीश्वर बालकदास महाराज के नेतृत्व में महिलाएं, पुरुष और बच्चे मंदिर में पूजन-अर्चन के बाद जयकारे लगाते हुए शोभायात्रा निकाली। 108 महिलाओं ने सिर पर जलपूरित कलश लिया था। पुरुष धर्म ध्वज लिए और गले में रामनामी दुपट्टा धारण किए चल रहे थे। आगे यजमान डॉ. अजय जायसवाल सिर पर पोथी लिए चल रहे थे। कथा व्यास बालकदास महाराज ने पहले दिन शिव विवाह की महिमा गान किया। कहा कि कलियुग में जहां

श्रीरामकथा होती है, वहां शिव जी की चर्चा अवश्य करनी चाहिए। कथा 14 जून तक प्रतिदिन शाम सात से रात 10 बजे तक चलेगी। शोभायात्रा में डॉ. पुष्पा जायसवाल, रविशंकर सिंह, रवि जायसवाल, जयशंकर गुप्ता, ज्ञानचंद मौर्य, डॉ. गीता चौबे, राजेश सेठ आदि शामिल रहे।मघा नक्षत्र हर्षण योग में 12 जून को मां विंध्यवासिनी जंयती मनाई जाएगी। देवी मंदिरों में विशेष पूजन अर्चन होगा। पूजन से मां की कृपा बरसेगी। मां के तीन रूपों मां आदिशक्ति महालक्ष्मी विंध्यवासिनी, अष्टभुजी अर्थात महासरस्वती और महाकाली के रूप में विराजमान हैं। मिर्जापुर में विध्यांचल धाम के अलावा काशी में काशीपुरा में मां विंध्यवासिनी मंदिर है ज्येष्ठ मास शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि पर मां विंध्यवासिनी मनाई जाएगी। इसे स्कंद षष्ठी भी कहते हैं। इस मां के प्राकट्योत्सव का पर्व मनाया जाता है। ज्योतिष विमल जैन व आचार्य दैवज्ञ कृष्ण शास्त्री ने ने बताया कि शुक्ल पक्ष की षष्ठी पर मां के प्राकट्योत्सव मनाया जाता है। इस दिन भक्त सुबह सननादि करके मां विन्ध्यवासिनी की पूजा करते हैं। घरों में मां की प्रतिमा रखकर उन्हें जल, पुष्प, अक्षत, रोली और भोग अर्पित कर विधिवत पूजन करते हैं। घी का दीपक जलाए जाते हैं और आरती कर हवन पूजन करते हैं। आचार्य दैवज्ञ कृष्ण ने बताया कि भगवती विंध्यवासिनी आद्या महाशक्ति हैं। विंध्याचल उनका निवास स्थान है। विंध्यगिरि को जाग्रत देवीपीठ है। महाभारत के विराट पर्व में धर्मराज युधिष्ठिर देवी की स्तुति की थी। श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध में इसकी कथा आती है।

वाराणसी में फिर बदला मौसम, चल रही गर्म हवाएं, तपने लगी धूप; पारा पहुंचा 42 के पार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। वाराणसी में एक बार फिर पहले जैसा माहौल हो गया है। घाटों पर सननटा छा गया है। जरूरत के हिसाब से ही लोग घर के बाहर निकल रहे हैं। सुबह से ही हो रही तीखी धूप के कारण आमजन बेहाल है।वाराणसी में पिछले दो दिन से बादलों की आवाजाही और नम हवाओं के चलने से कुछ राहत के बाद शुक्रवार को मौसम अचानक बदल गया। सुबह से ही तेज धूप होने के साथ ही गर्म हवाएं चल रही हैं। इससे एक बार फिर गर्मी बढ़ गई है। दोपहर एक बजे ही अधिकतम तापमान भी 42 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया है। जिस वजह से गर्मी के साथ-साथ बेचैनी भी बढ़ गई है मौसम वैज्ञानिक प्रोफेसर मनोज श्रीवास्तव के अनुसार, अगले दो-तीन दिनों तक तेज धूप होने के साथ ही गर्मी भी बढ़ने की संभावना है। 15 जून के बाद से मौसम में कुछ बदलाव के आसार है।

तत्काल टिकट की करते थे हेराफेरी अंतर्राज्यीय गिरोह के 3 शातिर अरेस्ट पुलिस व क्राइम ब्रांच को मिली सफलता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। तीनों आरोपियों के पास से लगभग 1 लाख 72 हजार के

तत्काल टिकट बरामद किए गए। उन्हें आरपीएफ पोस्ट पर लाकर पूछताछ किया गया। पकड़े गए आरोपियों ने बताया कि टिकट हम लोग दिल्ली, आगरा अलीगढ़ ,मुरादाबाद से बस से मंगवाते थे। जिसके कंडक्टर बनारस में आकर हम लोगों से संपर्क करते थे तो हम लोग उन बसों के कंडक्टर से जाकर टिकट लेकर यात्रियों को अतिरिक्त पैसे लेकर उपलब्ध करवाते थे। बनारस रेलवे स्टेशन के रेलवे पुलिस फोर्स व क्राइम टीम को शुक्रवार को बड़ी सफलता हाथ लगी। तत्काल टिकट की हेराफेरी करने वाले दलालों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से भरी मात्रा में तत्काल टिकट बरामद किया है बनारस स्टेशन के आरपीएफ प्रभारी निरीक्षक परमेश्वर कुमार व रेलवे क्राइम टीम के इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने शुक्रवार को मय टीम अंतराज्यीय तीन टिकट दलालों को वसुंधरा नगर कॉलोनी के पास एक चाय की दुकान पर छापा मारकर गिरफ्तार किया गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से लगभग 1 लाख 72 हजार के तत्काल टिकट विभिनन ट्रेनों के बरामद किया। पकड़े गए आरोपियों में वैभव मिश्रा, निवासी पोस्ट नेवढ़िया जिला जौनपुर, निशांत श्रीवास्तव, वर्ष निवासी थाना कोतवाली जिला वाराणसी, राकेश सोनकर, निवासी चौकाघाट थाना जैतपुरा का है। रेलवे क्राइम टीम के प्रभारी राजेश कुमार ने बताया कि कई दिनों से शिकायत मिल रही थी कि कुछ लोग रेलवे टिकट का कालाबाजारी करके उसे ऊंचे दामों पर बेच रहे है। शुक्रवार को मुखबिर से सूचना मिली की टिकट की कालाबाजारी करने वाले लहरतारा क्षेत्र के वसुंधरा कॉलोनी के पास मौजूद हैं बनारस स्टेशन के आरपीएफ इंस्पेक्टर परमेश्वर कुमार हेड कांस्टेबल मुकेश कुमार पांडे व कांस्टेबल विकास कुमार यादव, रेलवे क्राइम टीम के सब इंस्पेक्टर हरिश्चंद्र यादव ,हेड कांस्टेबल जनार्दन यादव पूरी टीम के साथ वसुंधरा कॉलोनी के गेट नंबर 3 के सामने एक चाय की दुकान पर छापेमारी की। फिलहाल रेलवे पुलिस इन्हें रेलवे कोर्ट में पेश करने की तैयारी कर रही है।

हेरिटेज मेडिकल कॉलेज के छात्र छात्राओं ने दिया धरना, बंद किया गेट; लगाया धांधली का आरोप

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। मेडिकल कॉलेज के छात्र-छात्राओं के प्रदर्शन की

जानकारी पर अधिकारियों ने अब तक कोई बयान नहीं जारी किया है। बताया जा रहा है कि धांधली का मामला कई वर्षों से चल रहा है।रोहनिया के भदवर स्थित हेरिटेज मेडिकल में शुक्रवार को उस समय हड़कंप मच गया जब यहां एमबीबीएस के छात्र-छात्राएं धरना-प्रदर्शन करने लगे। छात्रों ने दोनों गेट को बंद कर दिया। बाहर के मरीज और तीमारदार अंदर नहीं जा पा रहे हैं। हालांकि, अंदर भर्ती मरीजों का इलाज सीनियर डॉक्टर कर रहे हैं। छात्र-छात्राओं का आरोप हैं कि 2019 से हम लोग ये इंटर्नशिप कर रहे हैं। सरकार की तरफ से हमें जो धनराशि उपलब्ध कराई जाती है उसे अब आधा कर दिया गया है। वह भी असमय दिया जा रहा है।

आई.टी.आई में सीधे प्रवेश
NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश कार्यालय का हुआ उद्घाटन

नैनी। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश कार्यालय का हुआ उद्घाटन भारत सरकार द्वार मान्यता प्राप्त नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र प्रवेश कार्यालय का सिविल डिफेंस प्रयागराज के मंडल अधिकारी रौनक गुप्ता के द्वार किया गया प्रशिक्षण केंद के प्रवेश प्रभारी मोहम्मद कौसर ने बताया कि प्रयागराज में न्यूनतम शुल्क मुझे प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यहां इंडस्ट्रियल विजिट सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन, आदि कराया जाता है जिसे प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगिन विकास होता है. केंद्र गुणवत्ता परिषद द्वारा स्टार ग्रेडिंग प्राप्त है. केंद्र के कंप्यूटर शिक्षक रोहित शुक्ल ने बताया कि सरकार द्वार छात्रवृत्ति एवं टैबलेट की सुविधा उपलब्ध है प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरन सरकार द्वार मांडे भी दिया जाता है प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरन सरकार द्वार मांडे भी दिया जाता है. मुख्य अतिथि ने नवीन प्रवेशार्थियों का स्वागत एवं उज्जवल भविष्य की कामना की अंतरराष्ट्रीय स्तर का है प्रयागराज नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण के द्र-रौनक गुप्ता.इस अवसर पर निरीक्षक विजय पांडे, रोहित शुक्ला, सचिन श्रीवास्तव, मोहम्मद कौसर, प्रदीप जायसवाल आदि लोग उपस्थित रहें।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र.के छात्र रेलवे में चयनित

नैनी। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद के चार छात्रों का सिकंदराबाद में रेलवे में चयनित होने पर संस्थान परिवार ने बधाई दी है। प्रयागराज करछना तहसील के नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद के चार छात्रों का रेलवे के धारा रेल प्रोजेक्ट सिकंदराबाद में चयन होने से विद्यालय प्रबंधतंत्र द्वारा छात्र का सम्मान एवं अभिनन्दन किया। इस अवसर पर संस्थान के प्रवेश प्रभारी मोहम्मद कौसर ने इन छात्रों का समारोहपूर्वक अभिनंदन एवं सम्मान करते हुये कहा कि यह विद्यालय के लिये गौरव की बात है।संस्थान के शिक्षक सदैव इस बात पर बल देते हैं कि छात्र अच्छा सीखें और अपने भविष्य को उज्वल एवं सफल बनावें। उन्होंने भविष्य में और मेहनत व लगन से अध्यापन व अध्ययन करने हेतु शिक्षकों और छात्रों का आह्वान किया। इस अवसर पर केक काटकर केंद्र का स्थापना दिवस भी मनाया गया।

Admission Open 2024-25

श्री सत्यदेव दुबे (प्रधानाचार्य)
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भदोही

श्री सुजीत श्रीवास्तव (प्रधानाचार्य)
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, नैनी, प्रयागराज

इं. अर्चना सरोज (ट्रेनिंग एवं पलेसमेन्ट, अधिकारी
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, खागा, फतेहपुर

★ C.O.P.A.
★ Fitter
★ Computer Teacher Training
★ Electrician
★ Fire Safety & Industrial Security
★ Repair of Refrigerator & A.C.
★ Welding Technology
★ Certificate in YOGA
★ Security Service
★ Computer Hardware& Maintenance

Naini ITC Honored by U.P. State Industrial Association

JEEVAN EXPRESS NEWS

PRAYAGRAJ: A seminar was organized by Uttar Pradesh State Industrial Association on Friday. In which Naini Industrial Training Center was honored with a citation by the association's president Arvind Rai for providing high quality skilled workers. Mohammad Kausar received the honor from the Centre. On this occasion, all the entrepreneurs of Prayagraj including Arinnd Rai Sheetal Plastics, Anat Chandra Ventura Private Limited, BLKHN Engineering Works, S Shukla, Overseas Food Agro Private Limited, union officials and all the industrialists were present.

Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

SkyZen
INVEST IN INDIA'S FIRST SMART CITY DHOLERA SIR
INVESTMENT START FROM 7,00,000/- Lac
GREAT CHANCE TO BOOK YOUR PLOT
96 67 77 89 47 T&C APPLY

dholera A NEW ERA
Great Investment Opportunity in India's First Smart City DHOLERA SIR

Don't Think About it's Current Value
Think About it's Future Value
: OPTIONS :
Premium Plots
LAND
Residential
Industrial
Commercial
96 67 77 89 47
Most Reliable Developer in Dholera SIR
Investment Start From 7 Lac

थाना को0देहात पुलिस द्वारा जीत-हार की बाजी लगाकर जुआ खेल रहे 06 जुआरी गिरफ्तार मौके से नगदी व ताश के पत्ते बरामद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मीरजापुर। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर 'अभिनंदन' द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड़ एवं जुआरियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही एवं अभियुक्तों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में अभियान चलाकर कार्यवाही करने हेतु समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षगण को निर्देशित किया गया है। उक्त निर्देश के अनुक्रम में दिनांकः 05.06.2024 को प्रभारी निरीक्षक राणा प्रताप यादव मय पुलिस टीम द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर थाना को0देहात क्षेत्रांतर्गत बरबसपुर नहर के पास विनायक मैरिज लान के पीछे जीत-हार की बाजी लगाकर जुआ खेल रहे 06 जुआरियों 1. बिहारी लाल यादव पुत्र सन्तराम निवासी ग्राम गहिया थाना चिल्ह जनपद मीरजापुर, 2. सिकन्दर सोनकर पुत्र स्व0 टेडई निवासी राजपुर थाना को0देहात जनपद मीरजापुर, 3. अशोक कुमार पुत्र दयाशंकर चौहान निवासी भरूहना छोटी बारी थाना को0देहात जनपद मीरजापुर, 4. राज कुमार गौतम पुत्र श्यामलाल निवासी मिश्र लहौली थाना को0देहात जनपद मीरजापुर, 5. कटोरी सोनकर पुत्र स्व0 सरजू सोनकर निवासी तरकापुर थाना को0शहर जनपद मीरजापुर, 6. रवि चौहान पुत्र राधे चौहान निवासी भरूहना बड़ी बारी थाना को0देहात जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार किया गया जिसमें मौके से मालफड़ से 12600/- रूपये, जामातलाशी से 2145/- रूपये व 52 ताश का पत्ता बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बंध में थाना को0देहात पर मु0अ0सं0-133/24 धारा 3/4 सार्वजनिक जुआ अधिनियम पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी।

बालेंदु मणि त्रिपाठी समेत 4 पर मुकदमा दज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मीरजापुर। बीजेपी के पूर्व जिलाध्यक्ष बालेंदु मणि त्रिपाठी समेत 4 पर मुकदमा दर्ज, संगीन धाराओं में हुआ मुदकमा दर्ज, पंचायत मित्र की अज्ञात वाहन से हुई सड़क दुर्घटना में हुई मृत्यु के बाद पूर्व जिलाध्यक्ष समेत 4 को बनाया गया आरोपी, धारा 304^, 120 बी, 427 और 279 के तहत मुदकमा दर्ज, पूर्व जिलाध्यक्ष ने कहा की मेरे राजनैतिक विरोधी लगातार मेरे साथ कर रहें खड़यंत्र, मुझे जिलाध्यक्ष पद से हटाने में भी मेरे विरोधियो का रहा है हाथ, पुलिस मामले की करे जांच, दोषियों पर हो कार्यवाही, जिसका भाई मरा है उसके प्रति भी मेरी सहानुभूति, घटना की हो निष्पक्ष जांच, लालगंज थाना क्षेत्र का पतुलखी में हुआ था सड़क दुर्घटना।

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल ने सौंपा ज्ञापन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। गुरुवार को उ प्र उद्योग व्यापार मण्डल सोनभद्र ने प्रदेश अध्यक्ष मुकुन्द मिश्रा के निर्देश पर सदर विधायक भूपेश चौबे माननीय जिला अधिकारी सोनभद्र को मुख्य मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा जिला अध्यक्ष राजेश गुप्ता ने कहा कि कि पानमसाला व तम्बाकू की अलग अलग बिक्री करने की अधिसूचना आयुक्त खाध सुरक्षा औषधि प्रशासन ने 7 मई 2024 को जारी की जिसके अनुसार उत्तर प्रदेश में अब एक ही दुकान से पानमसाला और तम्बाकू की एक साथ बिक्री पर रोक लगा दी गई है यह आदेश पूर्ण रूप से अव्हावरिक है क्यो की पानमसाला और तम्बाकू का व्यवसाय हर गली नुक्कड़ चौक चौराहो ग्रामीण क्षेत्रों में होता है इस व्यवसाय में अधिकतर गरीब वर्ग के व्यापारी करते है और अपना अपने परिवार का भरण पोषण करते है जिनकी संख्या केवल उ प्र में ही लाखो में है उनके लिए पानमसाला व तम्बाकू की दुकान अलग अलग करना संभव ही नहीं है इस नियम से छोटे छोटे दुकानदारो का उत्पीड़न शोषण होगा भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा उ प्र उद्योग व्यापार मण्डल यह माग करता है कि उ प्र में या तो पानमसाला तम्बाकू की बिक्री पूर्णतः प्रतिबन्धित किया जाए अन्यथा इस आदेश को संज्ञान में लेते हुये निरस्त्रीकरण किया जाए जिससे व्यापारियों को व्यापार करने में मदद मिले और अनावश्यक उत्पीड़न का सामना न करना पड़े

ज्ञापन देने के दौरान बरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष संदीप सिहं चन्देल जिला महामंत्री राजेश बंसल जिला उपाध्यक्ष प्रकाश केशरी जिला संगठन मंत्री राजेश सोनी युवा जिला अध्यक्ष रमेश जायसवाल जिला कोषाध्यक्ष अजीत जायसवाल नगर अध्यक्ष आनन्द जायसवाल किराना अध्यक्ष श्याम लाल केशरी युवा नगर अध्यक्ष संदीप केशरी आई टी सेल अध्यक्ष अजय केशरी जिला उपाध्यक्ष मुकेश जायसवाल फल सब्जी मण्डी अध्यक्ष श्याम बाबु आदि व्यापारी गण उपस्थिति थे।

विंध्याचल मंदिर जाने से पहले पढ़ लें ये खबर, दिन में 3 घंटे के लिए बंद रहेगा प्रथम द्वार; लगाए जा रहे स्तंभ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मीरजापुर। गर्भगृह में कार्य शुरू होने से पहले जिला प्रशासन व श्रीविंध्य पंडा समाज की बैठक विंध्याचल में हुई। इस दौरान एडीएम शिव प्रताप शुक्ल और श्रीविंध्य पंडा समाज के अध्यक्ष पंकज द्विवेदी सहित कई लोग बैठक में मौजूद रहे। इसमें निणय्य लिया गया कि शाम तीन बजे से शाम छह बजे तक गर्भगृह में काम चलेगा। लाखों भक्तों की आस्था का केंद्र विंध्यवासिनी दरबार के गर्भगृह में शुक्रवार की दोपहर बाद तीन बजे से सोने व चांदी निर्मित मेहराब सहित स्तंभ लगाने का काम शुरू होगा। यह कार्य दोपहर बाद तीन से शाम छह बजे तक किया जाएगा। यह सिलसिला एक हफ्ते तक चलेगा। इसके चलते एक नंबर गेट से दर्शन पूजन कार्य की प्रगति के दौरान प्रभावित रहेगा। दो तीन दिन बाद दूसरे गेट की तरफ कार्य शुरू होगा तो उसे भी निर्माण कार्य के दौरान बंद किया जाएगा। मां विन्ध्यवासिनी के गर्भगृह में चार किलो सोना और 51 किलो चांदी लगने का काम का ट्रायल सात जून से शुरू हो गया था। मुम्बई के कारोबारी संजय सिंह जो मूलरूप से उत्तर प्रदेश के भदोही जनपद के रहने वाले हैं। उनके कंपनी के द्वारा मां के गर्भगृह में लगभग साढ़े चार करोड़ की लागत से सोने चांदी निर्मित मेहराब सहित स्तंभ लगवाया जा रहा है। बता दें कि पहले प्रथम गेट पर कार्य होगा जिसके चलते दो से तीन दिन प्रथम द्वार तीन से छह बजे तक बंद रहेगा। उसके बाद दूसरे नंबर गेट पर काम शुरू होगा और उस ओर से दर्शनार्थियों का प्रवेश प्रभावित रहेगा। इसके पहले जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन के समक्ष इस प्रस्ताव को रखा गया था जिसकी सहमति उन्होंने पूर्व में दिया था। शुक्रवार को मुम्बई के चार कारीगरों द्वारा सोने के पत्र को गर्भगृह में लगाने का ट्रायल भी किया गया। इसके लिए पूरी तैयारियां कर ली गई हैं।

नौकरी के लिए कोयला खदान में घुसे बेरोजगार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। एनसीएल की निगाही परियोजना में ओबी हटाने का काम कर रही कंडोई कंपनी में हुई नियुक्ति में मनमानी को लेकर क्षेत्र के बेरोजगार व पुराने कर्मचारियों ने बृहस्पतिवार को काम बंद कराकर प्रदर्शन शुरू कर दिया है। सुबह छह बजे से शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन दिनभर चला। आरोप था कि निजी कंपनी सिफारिश के आधार पर नौकरी दे रही है और स्थानीय युवाओं की उपेक्षा कर रही है।विरोध प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने कहा कि कंडोई कंपनी में ट्रायल दे चुके एक से आठ सौ तक पुराने कर्मचारियों की सूची तैयार की गई थी। सूची में शामिल सभी कर्मचारियों की नियुक्ति कर उन्हें काम पर रखना था लेकिन कंपनी के अधिकारी पुराने कर्मचारियों की नियुक्ति में रोड़ा बन गए। सूची में शामिल आठ सौ कमिर्यों में अभी तक उन्हीं लोगों की भर्ती हो सकी है जिनकी सिफारिश पहुंची है। अन्य कर्मचारियों को कपंनी के जिम्मेदारों ने किनारे कर दिया है। अधिकारियों की मनमानी से आक्रोशित स्थानीय बेरोजगारों को पुराने कर्मचारियों का साथ मिलने से मामला और गरम हो गया। नाराज लोग कोयला खदान क्षेत्र में स्थित कंपनी के कैंप पहुंच गए और अधिभार परिवहन का कार्य बंद करा दिया। सूचना पर सिंगरौली के नायब तहसीलदार सहित नवानगर थाने के टीआई पुलिस बल के साथ पहुंच गए। अधिकारियों ने आक्रोशित कर्मचारियों को समझाने का प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर भी मौके पर पहुंचकर आश्वस्त किया लेकिन सहमति नहीं बन पाई। कर्मचारियों का कहना था कि कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर झूठा आश्वासन देकर गुमराह कर चुके हैं अब कोल प्रबंधन का कोई बड़ा अधिकारी ठोस आश्वासन देता है तभी लोग हटेंगे धमकी देने से बिगड़ा माहौल नौकरी की मांग को लेकर खदान में विरोध प्रदर्शन कर रहे तीन सौ से अधिक पुराने कर्मचारियों पर कंपनी अधिकारियों की ओर से पुलिस का हवाला देकर उन्हें जेल भिजवाने की धमकी पर माहौल गरम हो गया। कर्मचारी रोजगार के मुद्दे पर विरोध प्रदर्शन पर अड़े रहे। कर्मचारियों ने कहा कि जब तक नौकरी पर नहीं रखा जाएगा तब तक विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

पाक्सो एक्टः दोषी सतीश भुइंया को 20 वर्ष का कठोर कारावास

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। साढ़े चार पूर्व 14 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश / विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र अमित वीर सिंह की अदालत ने शुक्रवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी सतीश भुइंया को 20 वर्ष का कठोर कारावास एवं एक लाख रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर छह माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 80 हजार रूपये पीडि़ता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक विंढमगंज थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीडि़ता के पिता ने विंढमगंज थाने में दी तहरीर में अवगत कराया था कि करीब दो माह से उसकी 14 वर्षीय नाबालिग बेटी के साथ सतीश भुइंया पुत्र रामनाथ भुइंया निवासी धूमा, थाना विंढमगंज, जिला सोनभद्र द्वारा जबरन बलात्कार किया जा रहा था और बेटी को धमकी दिया कि किसी से भी बताओगी तो जान से मार देंगे। पीडि़ता बेटी ने रोते हुए अपनी माँ से सारी घटना बताई। तब पतने ने उसे बताया। इस तहरीर पर 30 सितंबर 2019 को पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया। पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में दुष्कर्म और पाक्सो एक्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी सतीश भुइंया को 20 वर्ष का कठोर कारावास एवं एक लाख रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर छह माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 80 हजार रूपये पीडि़ता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश कुमार अग्रहरी, सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह ने बहस की।

सोनभद्र में 9 जून को होगा कवि सम्मेलन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। शहीद स्थल प्रवंधन ट्रस्ट करारी के तत्वावधान में नौ जून को सोनभद्र में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में सोनभद्र के अलावा वाराणसी, चंदौली, मिर्जापुर, भदोही जिलों से कवि और कवियित्री जुटेंगी। इस दौरान कवियित्री चंद्रलेखा सिंह की दूसरी पुस्तक सत्ता का खेल का विमोचन होगा और अभिनंदन समारोह में कई लोगों को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम के आयोजक प्रद्युमन त्रिपाठी एड ने बताया कि राबर्ट्सगंज कचहरी परिसर स्थित सोनभद्र बार एसोसिएशन सभागार में 9 जून 2024 दिन रविवार को सुबह दस बजे वरिष्ठ साहित्यकार अजय शेखर के अध्यक्षता में यह कार्यक्रम होगा। जिसमें अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के साथ ही कवियित्री चंद्रलेखा सिंह की दूसरी पुस्तक सत्ता का खेल का विमोचन होगा। इसके अलावा अभिनंदन समारोह में कई लोगों को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि सोनभद्र बार एसोसिएशन अध्यक्ष पूनम सिंह, पूर्व अध्यक्ष विनोद चौबे, पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र पांडेय के उपस्थिति में वरिष्ठ साहित्यकार गण रामनाथ शिवेंद्र ,जगदीश पंथी, पारसनाथ मिश्र के गरिमामय पदार्पण में बार सभागार कचहरी में सत्ता का खेल लेखिका चंद्रलेखा सिंह की दूसरी पुस्तक का विमोचन एवं अभिनंदन समारोह तथा विराट कवि सम्मेलन आयोजित है। जिसमें सोनभद्र के अलावा वाराणसी, चंदौली मिर्जापुर, भदोही जिलों से कवियों का आगमन हो रहा है ।

पर्यावरण संरक्षण के लिए लगाए जायेंगे एक हजार पौधे-गोविन्द सिंह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश सरकार के युवा कल्याण विभाग द्वारा संचालित संगठन युवक मंगल दल एंव सामाजिक संगठन युवा भारत ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में सदर ब्लॉक के राजपुर गाँव में पौध रोपण कर इस मानसून एक हजार पौधे लगाने का संकल्प लिया गया। राबर्ट्सगंज ब्लॉक के मंत्री एंव पंचायत इकाई के अध्यक्ष गोविन्द सिंह ने बताया की विगत वषी की तरह इस मानसून में भी यूथ आइकॉन सौरभ कांत पति तिवारी के निर्देश पर जनपद की सभी ग्राम पंचायतों में व्यापक स्तर पर पौधरोपण किया जायेगा। जिसके अंतर्गत सदर ब्लॉक के बीस ग्राम पंचायतो में एक हजार पौधे लगाने का लक्ष्य उन्हें दिया गया है। जिसकी शुरुआत उन्होंने राजपुर गाँव से फलदार पौधा लगाकर कर दी है। गोविन्द ने बताया की जल्द ही अपनी टीम के माध्यम से लक्ष्य को पूरा कर लेंगे और उन पौधों की सेवा करने की भी जिम्मेदारी लेंगे जिससे वह पौधा एक बड़ा वृक्ष बनकर लोगों को ऑक्सीजन,फल एंव छाँव दे सके। गाँव के तालाब पर नीम, पीपल,बरगद,आम,अमरुद,सागोंन आदि के पौधे लगाए गए।उक्त अवसर पर अध्यक्ष गोविन्द सिंह , नागार्जुन,आशीष, हिमांशु, चन्द्रमा,हर्ष, सनी, नीरु, नंदकिशोर, सूरज, आदि मौजूद रहे।

दुष्कर्म के दोषी शिक्षक को उम्रकैद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। साढ़े चार पूर्व 12 वर्षीय नाबालिग छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश / विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र अमित वीर सिंह की अदालत ने शुक्रवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी शिक्षक संतोष कुमार जायसवाल को उम्रकैद एवं दो लाख रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर छह माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से एक लाख 60 हजार रूपये पीडि़ता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक बभनी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीडि़ता की मां ने बभनी थाने में दी तहरीर में अवगत कराया था कि उसकी 12 वर्षीय नाबालिग बेटी कक्षा 5 में पढ़ती है। 6 नवंबर 2019 को जब बेटी स्कूल पढ़ने गई थी तो शिक्षक संतोष कुमार जायसवाल पुत्र भगौती जायसवाल ने छुट्टी होने पर सभी बच्चे चले गए, लेकिन उसकी बेटी को शिक्षक ने रोक लिया और करीब तीन बजे उसके साथ जबरन दुष्कर्म किया और बेटी को घर पहुंचा कर चला गया। बेटी को किसी से ना बताने के लिए मना किया था। पीडि़ता बेटी ने रोते हुए अपनी माँ से सारी घटना बताई। तब पतने ने उसे बताया। इस तहरीर पर 7 नवंबर 2019 को पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया। पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में दुष्कर्म और पाक्सो एक्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी शिक्षक संतोष कुमार जायसवाल को उम्रकैद एवं दो लाख रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर छह माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से एक लाख 60 हजार रूपये पीडि़ता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश कुमार अग्रहरी, सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह ने बहस की।

प्रतिनिधि के साथ जिला अस्पताल कर्मचारियों ने किया दुर्व्यवहार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। लोढी स्थित जिला अस्पताल परिसर में शुक्रवार को सदर ब्लाक अंतर्गत मुसहि क्षेत्र पंचायत सदस्य द्वारा दवा लेने पहुंचे जाने पर वहां के कर्मचारियों द्वारा उनसे हुआ दुर्व्यवहार के खिलाफ क्षेत्र पंचायत सदस्य ने थाने में एप्लीकेशन देकर मामले में उच्च स्तरीय कार्रवाई की की मांग नहीं हुई कार्रवाई तो क्षेत्र पंचायत सदस्य संबंधित जिला अस्पताल कर्मचारियों के खिलाफ करेंगे विरोध प्रदर्शन। पीडि़त क्षेत्र पंचायत सदस्य राम भरोसे मुसहर ने बताया कि शुक्रवार को जिला अस्पताल दवा लेने गए थे इसी दौरान वहां के चिकित्सक स्टाफ द्वारा दुर्व्यवहार किया गया और गाली दी गई मारने पीटने तक उतावले हो गए जिसको लेकर पीडि़त द्वारा तत्काल पुलिस को सूचना दी गई उसके बाद मौके पहुंची पुलिस द्वारा बीच बचाव करते हुए पीडि़त को थाने लाई पीडि़त ने संबंधित चिकित्सक को स्टाफ के खिलाफ तारीख देकर मामले में उच्च स्तरीय कार्रवाई करने की गुहार लगाई उधर मामले की जानकारी क्षेत्र पंचायत संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष पवन कुमार शुक्ला को हुई उनके द्वारा क्षेत्र पंचायत सदस्यों के साथ बैठक के लिए शनिवार को सभी क्षेत्र पंचायत सदस्यों को सूचित किया गया अगर कार्रवाई नहीं होती है तो जिला अस्पताल चिकित्सक को कर्मचारियों के खिलाफ धरना प्रदर्शन करने को रणनीति बनाई जाएगी इस तरह से प्रतिनिधियों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे चिकित्सक स्टाफ तो आम जनमानस के साथ क्या करते होंगे जिसको लेकर श्री शुक्ल ने मामले में जिलाधिकारी का ध्यान इस तरफ करते हुए संबंधितों के खिलाफ कड़ी कारवायीकरण कर आम जनमानस को सुविधा उपलब्ध कराने की गुहार लगाई।

भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष समेत पांच पर गैर इरादतन हत्या का मुकदमा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लालगंज। सड़क हादसे में हुई रोजगार सेवक की मौत मामले में मृतक के भाई की तहरीर पर पुलिस ने भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष बालेंदु मणि त्रिपाठी और पूर्व मंडल अध्यक्ष संतोष कुमार दुबे सहित पांच लोगों के खिलाफ बृहस्पतिवार को गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया है।लहंगपुर पुलिस चौकी अंतर्गत मड़वा नेवादा गांव निवासी 30 वर्षीय राजीव मौर्य गांव में रोजगार सेवक थे। वे बुधवार को ग्राम पंचायत के काम से बाइक से लालगंज ब्लॉक मुख्यालय जा रहे थे। दोपहर बाद ब्लॉक जाते समय पतुलखी गांव के पास किसी वाहन की चपेट में आने से उनकी मौत हो गई थी। लालगंज थाना क्षेत्र के कलवारी गांव निवासी भाई संजय कुमार मौर्य ने तहरीर देकर आरोप लगाया कि उनके भाई राजीव मौर्य को कई बार जान से मारने की धमकी मिली थी। आशंका है कि कार से भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष बालेंदु मणि त्रिपाठी, सुरेंद्र दुबे, भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष संतोष दुबे तथा अमरेश दुबे द्वारा दुर्घटना कर जान ले ली। लालगंज थानाध्यक्ष अजीत कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि सड़क हादसे में राजीव मौर्य की मौत हो गई थी। इस मामले में राजीव के भाई द्वारा अज्ञात चालक और चार लोगों के खिलाफ जान से मारने की आशंका जताई गई है। मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

घोरावल तहसील परिसर में गंदगी का अंबार :गिरीश पांडेय

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। स्वच्छता अभियान पर सरकार द्वारा किए जा रहे सभी दावों को घोता बता रहा है घोरावल तहसील परिसर। तहसील परिसर में आनेवाले आम लोगों के लिए न तो शुद्ध पेयजल की व्यवस्था है और न ही परिसर में बने शौचालय की स्थिति उपयोग लायक ही है। घोरावल तहसील परिसर का भ्रमण करने पहुंचे सोनभद्र विचार मंच के नेता गिरीश पाण्डेय ने बताया कि इतनी तेज धूप में दूर दराज से तहसील परिसर में आने वाले लोगों को पीने के लिए शुद्ध पानी देने के लिए लगा आर ओ प्लांट थूकदान बनकर रह गया है। इतना ही नहीं स्थानीय रहवासी अमरेश शुक्ला ने बताया कि तहसील परिसर में बने शौचालय में न तो पानी है और ना ही और ना ही साफ सफाई। वाइन गिरीश पांडे ने बताया कि इस संदर्भ में अधिवक्ताओं से भी वार्ता की गई के द्वारा बताया गया कि कई बार संबंधित अधिकारियों को इस विषय में पत्र देकर अवगत कराया गया इसके बाद भी केवल कागजी कार्रवाई कर कर कोरमा पूर्ति की जाती है जमीनी हकीकत पर कुछ और ही नजर आता है वही अधिवक्ता नेता वह ग्रामीणों का जिलाधिकारी की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए बताया कि मामले में तत्काल संज्ञान लेकर संबंधितों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए समस्याओं का निजात दिलाने का कष्ट करें।

151 मैच में 94 गोल, क्रिकेट प्रेमियों के देश में सुनील छेत्री ने भारतीय फुटबॉल को इंटरनेशनल लेवल पर दिलाई पहचान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

कोलकाता ।लगातार 19 साल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फुटबॉल खेलना, 151 मैचों में 94 गोल दागना साधारण बात नहीं है। वह भी ऐसे देश का प्रतिनिधित्व करते हुए, जहां क्रिकेट का जादू सिर चढ़कर बोलता है। सुनील छेत्री ने भारतीय फुटबॉल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाई है। इसे गंभीरता से लेना सिखाया है। फुटबॉल प्रेमी अब मैदान पर सुनील छेत्री की 11 नंबर जर्सी को उतना ही मिस करेंगे, जितना क्रिकेट प्रेमी सचिन तेंदुलकर की 10 नंबर जर्सी को करते हैं। सिकंदराबाद में जन्मे 39 साल के सुनील छेत्री की पारिवारिक पृष्ठभूमि फुटबॉल वाली रही है। उनकी मां व जुड़वां बहनें नेपाल की राष्ट्रीय महिला टीम के लिए खेल चुकी हैं। छेत्री के बचपन का ज्यादातर समय दार्जिलिंग में बीता। उन्होंने छोटी उम्र में ही फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया था और विभिनन टूर्नामेंटों में हिस्सा लेते थे। असाधारण प्रतिभा के बल पर वे आगे बढ़ते चले गए। सिकंदराबाद में जन्मे 39 साल के सुनील छेत्री की पारिवारिक पृष्ठभूमि फुटबॉल वाली रही है। उनकी मां व जुड़वां बहनें नेपाल की राष्ट्रीय महिला टीम के लिए खेल चुकी हैं। छेत्री के बचपन का ज्यादातर समय दार्जिलिंग में बीता। उन्होंने छोटी उम्र में ही फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया था और विभिनन टूर्नामेंटों में हिस्सा लेते थे। असाधारण प्रतिभा के बल पर वे आगे बढ़ते चले गए। उन्होंने 21 साल की उम्र में पाकिस्तान के विरुद्ध पहला अंतरराष्ट्रीय मैच खेला और फिर सफलता के पायदान चढ़ते चले गए। उनके शानदार खेल की बदौलत भारत ने 2007, 2009, 2012 में नेहरू कप और 2011, 2015 व 2021 में सैफ चैंपियनशिप जीती। सात बार 'एआइएफएफ प्लेयर आफ द इन्यर' रहे छेत्री क्लब स्तर पर भी 250 से अधिक गोल कर चुके हैं। छेत्री के पहले अंतरराष्ट्रीय मैच में उनके साथी रहे सैयद रहीम नबी ने कहा, ठसुनील ऐसे खिलाड़ी हैं, उन्हें जब खेलने का मौका नहीं मिल पाता था, तब वे ज्यादा अभ्यास करते थे। उनके रिटायर होने से भारतीय फुटबॉल में जो शून्यता आएगी, उसे भर पाना बेहद मुश्किल होगा।ठ पूर्व भारतीय गोलरक्षक भास्कर गांगुली कहते हैं,ठसुनील में त्याग, अनुशासन, समर्पण, दृढ़ निश्चय और महत्वाकांक्षा का अद्भुत सम्मिश्रण है। उन्होंने फुटबॉल की खातिर मिठाइयां खानी छोड़ दी थी, जो उन्हें सबसे अधिक पसंद थी ताकि अपने शरीर को फिट रख सके।ठ कोलकाता के मशहूर फुटबॉल क्लब मोहनबगान में छेत्री के साथ खेल चुके मेहताब हुसैन ने कहा,ठसुनील में गोल दागने की गजब की भूख थी। किसी मैच में गोल नहीं कर पाने पर वे रोते थे। उन्हें अपनी क्षमता का भली-भांति पता है और नेतृत्व करने की अद्भुत क्षमता है।ठ जाने-माने खेल पत्रकार बोरिया मजुमदार ने बताया, ठसुनील देश के ऐसे पहले फुटबॉलर हैं, जिनकी रिटायरमेंट की खबर इतनी सुखिर्यों में रही। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि मैं वह नहीं खाता, जो मुझे पसंद है। मैं वह खाता हूं, जिसकी मुझे जरुरत है। उन्होंने यह भी कहा था कि मैं मेसी और रोनाल्डो के बराबर नहीं हूं लेकिन उन दोनों से अधिक मेहनत कर सकता हूं। वे अगर 10 घंटे अभ्यास करते हैं तो मैं 20 घंटे कर सकता हूं।ठ मालूम हो कि छेत्री पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो (128), ईरान के अली डेई (108) और अर्जेंटीना के लियोन मेसी (106) के बाद अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में सबसे ज्यादा गोल दागने वाले खिलाड़ी हैं। पूर्व फुटबॉलर दीपेंदु विश्वास ने कहा, ठभारत की जर्सी पहनकर 94 अंतरराष्ट्रीय गोल करना बहुत बड़ी बात है। फीफा ने कुछ समय पहले मेसी-रोनाल्डो के साथ छेत्री की तस्वीर पोस्ट की थी। यह हम सबके लिए बेहद गर्व की बात है।

भारत ने आयरलैंड को रौंदने के साथ ही तोड़ा चिर प्रतिद्वंद्वी का बड़ा रिकॉर्ड

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। टी20 विश्व कप 2024 के 8वें मुकाबले में बुधवार को भारतीय टीम ने आयरलैंड टीम को 8 विकेट से रौंद दिया। इसके साथ ही टीम इंडिया ने टूर्नामेंट का विजयी आगाज किया। न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए इस मैच में जीत के साथ ही भारतीय टीम ने पाकिस्तान का बड़ा रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है। अब इंडिया टी20 विश्व कप में दूसरी सबसे ज्यादा मुकाबले जीतने वाली टीम बन गई है। इस लिस्ट में टॉप पर श्रीलंका है। ले की बात करें तो टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी आयरलैंड टीम 16 ओवर में 96 रन पर सिमट गई थी। गैरेथ डेलानी ने सबसे ज्यादा 26 रन की पारी खेली। उनके अलावा जोशुआ लिटिल ने 14 और कर्टिस कैम्फर ने 12 रन बनाए थे। भारत की ओर से हार्दिक पांड्या ने सबसे ज्यादा 3 विकेट चटकाए। उनके अलावा अर्शदीप सिंह-जसप्रीत बुमराह को 2-2 और मोहम्मद सिराज-अक्षर पटेल को 1-1 सफलता मिली। भारतीय टीम ने टी20 विश्व कप में अब तक 46 मैच खेले हैं और सुपर ओवर समेत 29 में जीत दर्ज की है।

गुस्सा है तो गेंद पर निकालो आजम खान गोल्डन डक पर आउट होने के बाद पाक क्रिकेटर ने फैंस को घूरा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2024 में पाकिस्तान का आगाज बेहद शर्मनाक हुआ है। सह-मेजबान अमेरिका ने पाकिस्तान को सुपर ओवर में 5 रन से धूल चटाई। मैच में खराब प्रदर्शन के चलते जहां पूरी टीम की आलोचना हो रही है। वहीं, आजम खान का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। गोल्डन डक पर आउट होने के बाद आजम जब ड्रेसिंग रूम की तरफ जा रहे थे तो किसी फैंस ने उन पर कुछ कमेंट किया। इस आजम खान आग बबूला हो गए। गुस्से में आजम खान ने फैंस की तरफ घूरते हुए देखा। अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। फैंस कमेंट कर आजम खान के चयन पर सवाल उठा रहे है पाकिस्तान क्रिकेट टीम की उस समय खूब फजीहत हुई जब यूएसए ने पाकिस्तान को हरा दिया। पाकिस्तान टीम की बैटिंग, बॉलिंग और फील्डिंग तीनों ही विभाग में नाकामयाबी हाथ लगी। इस मैच के दौरान एक ऐसी घटना घटी जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेज से वायरल हो रहा है। दरअसल, जब पाकिस्तान टीम को आजम खान की सबसे ज्यादा जरूरत थी तो वह गोल्डन डक पर आउट हो गए। गोल्डन डक पर आउट होने के बाद आजम जब ड्रेसिंग रूम की तरफ जा रहे थे तो किसी फैंस ने उन पर कुछ कमेंट किया। इस आजम खान आग बबूला हो गए। गुस्से में आजम खान ने फैंस की तरफ घूरते हुए देखा। अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। फैंस कमेंट कर आजम खान के चयन पर सवाल उठा रहे हैं। साथ ही टीम मैनेजमेंट पर नेपोटिज्म का आरोप भी लगा रहे हैं। बता दें कि टी20 में आजम खान ने अभी कोई दमदार प्रदर्शन नहीं किया है। इसके बावजूद उनका चयन टी20 वर्ल्ड कप में किया गया है। वह विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर टीम में शामिल हुए हैं। इंग्लैंड दौरे पर इनका विदेशी करेंसी से पसीना पोंछने का भी वीडियो वायरल हुआ था। इस पर भी क्रिकेट फैंस ने आजम खान की खूब आलोचना की थी।

सुपर ओवर में अमेरिका ने किया बड़ा उलटफेर पाकिस्तान को चटाई धूल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। टी20 विश्व कप 2024 के 11वें मुकाबले में अमेरिका टीम ने बड़ा उलटफेर कर दिया। ग्रांड प्रेयरी स्टेडियम में खेले गए इस मैच में मेजबान अमेरिका ने सुपर ओवर में पाकिस्तान को हराकर इतिहास रच दिया। दूसरी ओर शर्मनाक हार के कारण पाकिस्तान की काफी किरकिरी हो रही है। मुकाबले की बात करें तो टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तान ने 7 विकेट खोकर 159 रन बनाए। जवाब में ऊर्ई टीम भी 20 ओवर में 159 रन ही बना पाई और मैच टाई हो गया। सुपर ओवर में अमेरिकी टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 गेंदों पर 18 रन बनाए। पाकिस्तान की ओर से यह ओवर मोहम्मद आमिर ने फेंका। ऐसे में पाकिस्तान को जीत के लिए सुपर ओवर में 19 रनों की दरकार थी लेकिन टीम 13 रन की बना सकी। ऊर्ई की ओर से यह ओवर सौरभ नेत्रावलकर ने किया। हार के बाद पाकिस्तान की किरकिरी हो रही है। सुपर ओवर में अमेरिकी टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 गेंदों पर 18 रन बनाए। पाकिस्तान की ओर से यह ओवर मोहम्मद आमिर ने फेंका। ओवर की पहली गेंद पर आरोन जोन्स ने चौका लगाया। दूसरी गेंद पर आरोन जोन्स ने 2 रन लिए। तीसरे गेंद पर उन्होंने सिंगल निकाला। अगली गेंद वाइड रही और इस पर 2 रन की भी आए। चौथी गेंद पर हरमीत सिंह ने 1 रन चुराया। अगली गेंद फिर वाइड रही और इस पर 2 रन बने। ओवर की 5वीं गेंद पर आरोन जोन्स ने 2 रन बनाए। अगली गेंद एक बार फिर वाइड रही और इस पर 3 रन भी आए। ओवर की आखिरी गेंद पर 1 रन बना और 1 विकेट भी गिरा। ऐसे में पाकिस्तान को जीत के लिए सुपर ओवर में 19 रनों की दरकार थी, लेकिन टीम 13 रन की बना सकी। ऊर्ई की ओर से यह ओवर सौरभ नेत्रावलकर ने किया। ओवर की पहली गेंद पर इफ्तिखार अहमद कोई रन नहीं बना पाए। दूसरी गेंद पर उन्होंने चौका लगाया। अगली गेंद वाइड रही। ओवर की तीसरी गेंद पर इफ्तिखार अहमद कैच आउट हुए। इसके बाद अगली गेंद फिर वाइड रही।

सरबजोत सह ने 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता, फाइनल में 242.7 अंक जुटाए

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सरबजोत सह ने गत विश्व चैंपियन और चार बार के ओलंपियन की मौजूदगी वाली 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर गुरुवार को यहां आईएसएसएफ विश्व कप में भारत के पदक का खाता खोला। भारत के 22 वर्ष के सरबजोत ने आठ निशानेबाजों के फाइनल में 242.7 अंक जुटाए। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी चीन के बू शुआइहेंग को 0.2 अंक से पछाड़ा। जर्मनी के रोबिन वाल्टर ने कांस्य पदक जीत सरबजोत ने बुधवार को क्वालीफाइंग में 588 अंक के साथ शीर्ष पर रहते हुए फाइनल में जगह बनाई थी। फाइनल में गत विश्व चैंपियन चीन के बोवेन झेंग और तुर्की के चार बार के ओलंपिक यूसुफ डिकेक भी चुनौती पेश कर रहे थे। सरबजोत ने हालांकि फाइनल में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हुए आइएसएसएफ विश्व कप में अपना दूसरा व्यक्तिगत पदक जीता सरबजोत ने बुधवार को क्वालीफाइंग में 588 अंक के साथ शीर्ष पर रहते हुए फाइनल में जगह बनाई थी। फाइनल में गत विश्व चैंपियन चीन के बोवेन झेंग और तुर्की के चार बार के ओलंपिक यूसुफ डिकेक भी चुनौती पेश कर रहे थे। सरबजोत ने हालांकि, फाइनल में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हुए आइएसएसएफ विश्व कप में अपना दूसरा व्यक्तिगत पदक जीता। इससे पहले उन्होंने पिछले वर्ष भोपाल में भी स्वर्ण पदक जीता था। युवा भारतीय निशानेबाज ने शुरुआती पांच शॉट में तीन बार 10 से अधिक अंक जुटाकर शुरुआती बढ़त बनाई। सरबजोत ने लगातार अच्छी निशानेबाजी की और 14वें शाट से पहले तक बढ़त बरकरार रखी, जब वाल्टर ने उनकी बराबरी कर ली। सरबजोत ने 15वें शॉट में 10.8 अंक के साथ अपना दावा मजबूत किया जबकि वाल्टर 8.6 अंक ही जुटा पाए। पांचवें नंबर पर झेंग के बाहर होने के बाद वाल्टर ने डिकेक को पछाड़कर कांस्य पदक जीता। अंतिम दो शॉट से पहले सरबजोत और बू के बीच 1.4 अंक का अंतर था और भारतीय निशानेबाज ने जीत दर्ज करके स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इससे पहले सरबजोत पेरिस ओलंपिक के लिए चयन ट्रायल में भी शीर्ष पर रहे थे। सरबजोत ने चांगवोन में एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप 2023 की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में भी कांस्य पदक जीता था और भारत के लिए पेरिस ओलिंपिक का पहला पिस्टल कोटा प्राप्त किया था।

टी20 विश्व कप 2024 में ऋषभ पंत की पोजिशन हुई पक्की, भारतीय टीम के बैटिंग कोच ने किया बड़ा खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय टीम के बैटिंग कोच विक्रम राठौड़ ने कहा कि ऋषभ पंत को मौजूदा टी20 विश्व कप 2024 में नंबर-3 बैटिंग पॉजिशन पर बैटिंग करनी चाहिए। आयरलैंड के खिलाफ भारतीय टीम की तरफ से विराट कोहली और रोहित शर्मा ने पारी का आगाज किया था और नंबर 3 पर पंत खेलते हुए नजर आए थे। भारतीय टीम के बैटिंग कोच विक्रम राठौड़ ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 में ऋषभ पंत की पोजिशन पर बड़ा खुलासा किया है। राठौड़ ने कहा कि पंत ने आयरलैंड के खिलाफ शानदार बैटिंग की और पूरे टूर्नामेंट में वो नंबर-3 पर ही खेलना जारी रखेंगे। इसके अलावा राठौड़ ने भारतीय ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या की भी तारीफ की और कहा कि वो गेंदबाजी के लिए फिट है पंत और हार्दिक पांड्या की जोड़ी ने शानदार साझेदारी कर टीम को ये स्कोर खड़ा करने में खास मदद की थी। पंत के नंबर 3 पर शानदार प्रदर्शन के बाद भारत के बैटिंग कोच विक्रम राठौर ने एक बयान दिया है। उन्होंने हार्दिक-पंत की जमाकर तारीफ की और कहा कि टी20 विश्व कप में पंत नंबर-3 पर ही खेलना जारी रखेंगे दरअसल, भारतीय टीम ने आयरलैंड को टी20 विश्व कप 2024 में खेले गए अपने पहले मैच में 8 विकेट से धूल चटाई थी। भारत की इस जीत में ऋषभ पंत और हार्दिक पंड्या दोनों ने अहम भूमिका निभाई थी। विक्रम राठौड़ ने मैच के बाद कहा कि पंत शानदार बल्लेबाजी कर रहा है। दोनों मैचों (अभ्यास मैच और आयरलैंड मैच) में उसने अच्छी बल्लेबाजी की। इस समय हमारे लिए तीसरे नंबर का बल्लेबाज वही है और उसके लेफ्ट हैंडर बैटर होने से फायदा मिल रहा है। ऋषभ पंत ने आयरलैंड के खिलाफ 26 गेंद पर 36 रन की नाबाद पारी खेली थी कोच विक्रम राठौर ने साथ ये भी कहा कि इस मौजूदा समय में वह हमारे लिए नंबर-3 पॉजिशन पर खेलेंगे, क्योंकि वह लेफ्ट हैंड बैटर हैं, जिससे उन्हें मदद मिलेगी। इसके साथ ही उन्होंने हार्दिक पांड्या की जमकर तारीफ की। राठौर ने कहा कि हार्दिक वास्तव में अच्छा लग रहा था। हार्दिक - मेरा मतलब है, अभ्यास खेल में भी और अभ्यास में भी वास्तव में अच्छी गेंदबाजी कर रहा है। उन्होंने कहा कि वह चार ओवर खेलने के लिए काफी फिट दिख रहा है और वह कुछ गति और कुछ सटीकता के साथ गेंदबाजी कर रहा है, इसलिए हां, यह बहुत अच्छा है।

इस सप्ताह की शुरुआत प्रसन्नता के साथ होगी। लेकिन बातचीत में संवत रहें। शिक्षा से जुड़े काम पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धैर्य रखना होगा। भागदौड़ बनी रहेगी।

इस सप्ताह आत्म संवत रहने की आवश्यकता है। मन परेशान रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के

मन में आशा-निराशा बनी रहेगी। नकारात्मक विचारों से बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी में कार्यभार में बढ़ोतरी

सप्ताह के शुरूआत से वाणी में मधुरता रहेगी, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखने की कोशिश करें। शिक्षा से जुड़े कामों में सफलता मिलेगी। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखना

सप्ताह के पहले दिन से मन में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है। शासन सत्ता का योग बन रहा है। भवन सुख मिलेगा। शिक्षा से जुड़े काम में

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मेहनत ज्यादा होगी। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ेगी। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। मन परेशान हो सकता है। स्वभाव में

नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों

इस सप्ताह परिवार के साथ धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। माता का सहयोग भी प्राप्त होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। ज्यादा उत्साही होने से बचें।

नौकरी में तरक्की होने की संभावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव बना रहेगा। मानसिक शांति रहेगी। गुस्सा पर काबू रखें।

परिवार में हंसी-खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। नकारात्मक विचारों से बचाव

मन खुश रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

ग्रैंडमास्टर आर प्रगनानंद नौवें दौर में, आज अमेरिका के फेबियानो कारूआना से भिड़ेंगे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली।नार्वे शतरंज टूर्नामेंट अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका है जिसमें भारत के ग्रैंडमास्टर आर प्रगनानंद आज नौवें दौर में अमेरिका के फेबियानो कारूआना से भिड़ेंगे। प्रगनानंद के लिए यह प्रतियोगिता अभी तक उतार-चढ़ाव भरी ही रही है। उन्होंने क्लासिकल व आर्मागेडोन मुकाबले के तहत दो-दो मैच जीते हैं और दो दौर शेष रहते तीसरे स्थान पर आ गए हैं। टूर्नामेंट में इससे पहले विश्व के नंबर एक मैगन्स कार्लसन और नंबर दो कारूआना पर उनकी जीत मुख्य आकर्षण रहीं जबकि आर्मगेडन में तीन हार उनका नकारात्मक पक्ष रहा है आठवें दौर तक कार्लसन 14.5 अंक लेकर तीन क्लासिकल जीत के साथ शीर्ष पर हैं और उनके बाद अमेरिकी ग्रैंडमास्टर हिकारू नाकामुरा उनसे पूरे एक अंक पीछे हैं। प्रगनानंद 12 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं और वह फ्रांस के फिरोजा अलीरेजा से आगे हैं जिनके 11 अंक हैं। नौं अंकों के साथ कारूआना वर्तमान विश्व चैंपियन चीन के डिग लिरेन से आगे दूसरे स्थान पर हैं। आठवें दौर तक कार्लसन 14.5 अंक लेकर तीन क्लासिकल जीत के साथ शीर्ष पर हैं और उनके बाद अमेरिकी ग्रैंडमास्टर हिकारू नाकामुरा उनसे पूरे एक अंक पीछे हैं। प्रगनानंद 12 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं और वह फ्रांस के फिरोजा अलीरेजा से आगे हैं जिनके 11 अंक हैं। नौं अंकों के साथ कारूआना वर्तमान विश्व चैंपियन चीन के डिग लिरेन से आगे दूसरे स्थान पर हैं जो फिलहाल आखिरी स्थान पर चल रहे हैं। अंतिम दौर में कारूआना से सामना होने के बाद प्रगनानंद की टक्कर नाकामुरा से होगी और दो ड्रा संभवतः विश्व रैंकिंग में शीर्ष-10 में उनका स्थान बरकरार रखेंगे। मालूम हो कि इस समय प्रगनानंद लाइव फिडे रेटिंग में नौवें नंबर पर हैं। महिला वर्ग में प्रगनानंद की बहन आर वैशाली 11.5 अंक बनाकर टिंगजी लेई के साथ संयुक्त तीसरे स्थान पर हैं। आज वैशाली का लेई के विरुद्ध काले मोहरों के साथ मुकाबला होगा।

सम्पादकीय

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के तुरंत बाद चुनाव न कराकर भाजपा ने की गलती

वैसे आज की परिस्थितियों को देखकर लगता है कि भाजपा ने राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के तुरंत बाद लोकसभा चुनाव नहीं कराकर बड़ी राजनीतिक भूल की है, क्योंकि उस समय देश में राम मंदिर को लेकर एक लहर दौड़ रही थी। 4 जून को जैसे-जैसे ईवीएम खुल रही थी और वोटों की गिनती हो रही थी, वैसे-वैसे भारतीय जनता पार्टी बहुमत के जादुई आंकड़े से पिछड़ती जा रही थी, तब एक विचार भाजपा कार्यकर्ताओं के मन में जरूर आ रहा था, काश! अयोध्या में भगवान राम के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के ठीक बाद फरवरी-मार्च में लोकसभा चुनाव करा लिए जाते तो पार्टी को राम मंदिर की लहर का भरपूर लाभ मिलता। वो बहुमत का आंकड़ा स्वयं अपने बल पर हासिल कर लेती। यह विचार अब इसलिए भी उठ रहा है, क्योंकि पिछले साल नवंबर-दिसंबर में सोशल मीडिया पर यह चर्चा बहुत तेजी से चली थी। दरअसल, उन चर्चाओं में कहा जा रहा था कि 22 जनवरी को राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की शाम को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकसभा भंग कर नए

चुनावों की सिफारिश राष्ट्रपति से करने वाले हैं। इस चर्चा का शुरुआत में सरकार की ओर से कोई खंडन नहीं आया। हालांकि कई दिनों की चर्चा के बाद नरेंद्र मोदी सरकार के कुछ मंत्रियों ने जल्दी चुनाव के इस विचार को खारिज किया। तब यही कहा गया था कि मोदी 2.0 सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी और समय पर चुनाव होंगे। वैसे आज की परिस्थितियों को देखकर लगता है कि भाजपा ने राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के तुरंत बाद लोकसभा चुनाव नहीं कराकर बड़ी राजनीतिक भूल की है, क्योंकि उस समय देश में राम मंदिर को लेकर एक लहर दौड़ रही थी। हर घर पर भगवा लहरा रहा था। लोग दीपावली मना रहे थे। फिर दिसंबर में भाजपा तीन बड़े राज्यों राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में बहुमत के साथ सरकार में लौटी थी। तीनों राज्यों में भाजपा को अच्छा समर्थन मिला था। हालांकि, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में तो भाजपा ने उस समर्थन को सीटों में तब्दील कर लिया है, लेकिन राजस्थान में पार्टी हैट्रिक लगाने से चूक गई। दरअसल, राज्य में 25 में से 11 सीटें पार्टी हार गई है। फरवरी में चुनाव कराने का सबसे अधिक लाभ राजस्थान में मिल सकता था, क्योंकि राम मंदिर के लिए सर्वाधिक चंदा यदि किसी राज्य से आया तो वो राजस्थान है। राम मंदिर की लहर में जाति की राजनीति भी पीछे छूट जाती। उस दौरान इंडी गठबंधन केवल बैठकों में जुटा था। गठबंधन में किसी एक मुद्दे पर सहमति नहीं बन पा रही थी। नरेंद्र मोदी का समय से पहले लोकसभा चुनाव कराने का फैसला इंडी गठबंधन को हैरान कर देता। इंडी गठबंधन को चुनावी तैयारी का खास मौका नहीं मिल पाता। उसका विश्वास डगमगा जाता। दूसरा, कांग्रेस ने राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण पत्र ठुकरा दिया था। समाजवादी पार्टी के सुप्रीमो अखिलेश यादव समेत कई अन्य दलों ने प्राण प्रतिष्ठा समारोह में न जाने का निणन्य लिया था। उस समय इन पाटिन्यों की छवि हिंदू विरोधी होने का प्रचार भाजपा कर रही थी। दरअसल, राम मंदिर भाजपा के उन तीन प्रमख मुद्दों में शामिल रहा है, जिन्हें लेकर पार्टी अपने गठन के साथ संकल्प पत्र में शामिल करती आ रही है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का वादा पूरा होने के बाद राम मंदिर पर पार्टी ने पूरा दांव लगाया था। जनता भी इस बात से खुश थी कि 500 साल की लड़ाई के बाद अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बनकर तैयार हो रहा है। अयोध्या में विकास की कई योजनाएं सरकार चला भी रही है। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार धार्मिक पर्यटन पर बहुत जोर दे रही है। यदि फरवरी-मार्च में चुनाव हो जाते हैं तो इसका सकारात्मक प्रभाव वोटरों पर पड़ता। उस समय अयोध्या के साथ मथुरा और काशी की बात तेजी से उठ रही थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि पहुंचे थे। वो पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने जन्मभूमि जाकर भगवान के दर्शन किए। यही वो समय था, जब काशी में ज्ञानवापी को लेकर भी कोर्ट में केस गर्माया हुआ था। तीनों मंदिरों को लेकर एक ज्वार देश में आया हुआ था। फरवरी-मार्च में लोकसभा चुनाव का लाभ सर्वाधिक उत्तर प्रदेश में मिलता, जहां अभी भाजपा की पिछले तीन चुनावों में सबसे बुरी तरह हार हुई है। वो 33 सीटों पर सिमट कर रह गई है। यदि राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के ठीक बाद चुनाव और अब चुनाव का आकलन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि तब भाजपा वर्ष 2014 वाला करिश्मा दोहरा सकती थी, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, लोगों के जहन से राम मंदिर का मुद्दा ओझल होता चला गया। इंडी गठबंधन को न केवल तैयारियों के लिए अतिरिक्त समय मिला, बल्कि आरक्षण, संविधान जैसे मुद्दों पर उसने वोटरों का रुख अपनी ओर भी कर लिया हालांकि, समय से पूर्व लोकसभा चुनाव न कराने के पीछे नरेंद्र मोदी के आगे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का उदाहरण भी रहा होगा। वर्ष 2004 में अटल बिहारी वाजपेयी ने दिसंबर 2003 में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में विधानसभा चुनावों में जीत से उत्साहित होकर समय से पूर्व लोकसभा चुनाव कराने का जोखिम लिया था। तब पार्टी को शाइनिंग इंडिया कैंपन पर बहुत अधिक भरोसा था। आज की तरह उस समय भी भाजपा अति आत्मविश्वास से लबरेज थी। तब अटल बिहारी वाजपेयी वर्ष 1999 के चुनाव वाला करिश्मा नहीं दोहरा पाए थे और पार्टी सत्ता से बाहर हो गई थी। फिर अगले एक दशक तक भाजपा सत्ता में लौट नहीं सकी। वर्ष 2004 में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने समय से पहले लोकसभा चुनाव कराने को पार्टी हित में बताया था। वर्ष 2004 की हार से अटल बिहारी वाजपेयी उभर नहीं सके थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बात पर अब मंथन कर रहे होंगे कि यदि लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया फरवरी-मार्च में संपनन्‍ कर ली जाती है तो पार्टी अच्छी स्थिति में रहती और तीसरी बार बहुमत के साथ वो सत्ता में वापसी करते। उन्हें गठबंधन के साथियों पर निर्भर नहीं होना पड़ता। जिन बड़े फैसलों की चर्चा वो चुनाव के दौरान कर रहे थे, उन्हें वो खुलकर लागू करा पाते। अब उन्हें हर फैसले को लेकर सहयोगी दलों पर आश्रित होना पड़ेगा। समय से पूर्व लोकसभा चुनाव न कराने की गलती भाजपा को बहुत भारी पड़ी है। यहां तक वो अयोध्या की सीट तक हार गई, जिसका मनोवैज्ञानिक दबाव निश्चित रूप से पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों पर पड़ रहा है।

अमेरिका में कट्टरपंथियों का ठिकाना, फिर भी नही वहां के आदर्शों की परवाह

अमेरिका बांग्लादेशियों को आकर्षित करता है, तो इसकी वजह वहां नौकरी करने, व्यापार करने, स्वतंत्रता से चलने-फिरने, अपने धर्म का पालन करने और बच्चों को स्कूलों में मुफ्त में पढ़ाने की सुविधा है। इसके बावजूद अमेरिका में रहने वाले ये लोग अमेरिकी आदर्शों को थोड़ा भी नहीं मानते।कुछ दिनों पहले न्यूयॉर्क में सुचित्रा सेन चलचित्र उत्सव का आयोजन हुआ। इसका आयोजन न्यूयॉर्क में रह रहे अनिवासी बांग्लादेशियों ने किया था। इससे कुछ ही दिनों पहले न्यूयॉर्क में बांग्ला पुस्तक मेला और साहित्य अनुष्ठान आयोजित हुए थे। इनके आयोजक भी अनिवासी बांग्लादेशी थे। इससे ऐसा लगता है कि अमेरिका में रहने वाले सभी बंगाली शायद प्रगतिशील हैं, सभी शायद साहित्य या संस्कृति प्रेमी हैं। क्या सच में ऐसा है?बेशक ढाका और न्यूयॉर्क में बहुत अंतर है। अमेरिका और बांग्लादेश में जो अंतर है, ढाका और न्यूयॉर्क में वही अंतर है। अमेरिका चूंकि बांग्लादेश की तुलना में अत्यधिक विकसित और सभ्य देश है, इस कारण बड़ी संख्या में बांग्लादेशी अमेरिका की स्थायी नागरिकता पाने के लिए अमेरिका जाते हैं। कट्टर मुस्लिम भी, जो हमेशा धर्म के नशे में चूर रहते हैं, ईसाइयों-यहूदियों से घृणा करते हैं, उन्हें गाली देते हैं, मौका मिलने पर वे भी अमेरिका जाने का जुगाड़ बिठाते हैं। वे अगर चाहें, तो आराम से अरब देशों में बस सकते हैं, पर वे ऐसा नहीं करते। बांग्लादेशियों को भी अमेरिका बहुत आकर्षित करता है। अमेरिका की नागरिकता मिलने पर उनका जीवन धन्य हो जाए। स्थायी निवास के लिए उन्हें ईसाइयों, यहूदियों और नास्तिकों का देश अमेरिका ही पसंद है। बहुत लोग तो जोखिम उठाकर भी पश्चिमी देशों में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं। रात के अंधेरे में नाव से भूमध्यसागर पार कर यूरोप पहुंचते हैं। नाव के डूब जाने से बहुतों की जान भी जाती है। इसके बावजूद नाव से समुद्र पार करने की जोखिम भरी कोशिशों पर विराम नहीं लगता। अरब देश में हज करने जाने, अरब देशों की पोशाक पहनने, अरब देशों की भाषा और आचार-व्यवहार का अनुसरण करने और अरब लोगों को महामानव समझने के बावजूद बांग्लादेश के लोग अरब देशों में बसने की उत्सुकता नहीं दिखाते। इसके बजाय अरब देशों में श्रमिक का काम करने गए लोग जितनी जल्दी संभव हो सके, घर लौट आने के बारे में सोचते हैं। और अरब देशों में लोगों के घरों में काम करने वाली बांग्लादेशी महिलाएं अपनी जान बचाने के लिए घर लौट आती हैं, या फिर लाश बनकर लौटती हैं अमेरिका बांग्लादेशियों को आकर्षित करता है, तो उसकी वजह है। अमेरिका में नौकरी करने, व्यापार करने, स्वतंत्रता से चलने-फिरने, अपने धर्म का पालन करने, बच्चों को स्कूलों में मुफ्त में पढ़ाने की सुविधा है। वहां रुपये-पैसे न रहने पर फूड पैकेट मिलता है, मुफ्त में इलाज, दवा, आया आदि की सुविधा है। सर्वोपरि, अमेरिका में मानवाधिकार पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है, जबकि बांग्लादेश में मानवाधिकार की किसी को परवाह ही नहीं है। इसके बावजूद अमेरिका में रहने वाले ये लोग अमेरिकी आदर्शों को थोड़ा भी नहीं मानते। अमेरिका इन्हें उदार नहीं बना पाता। अमेरिका में रहते हुए भी ये बांग्लादेशी बने रहते हैं। भोजन की खोज इन्हें हलाल मीट की दुकान पर ले जाती है। अमेरिका में आने के बावजूद ये बांग्लादेश का पहनावा नहीं छोड़ते। महिलाएं बुर्का और नकाब नहीं छोड़तीं। अमेरिका में रहते हुए भी ये धार्मिक कट्टरता को बरकरार रखते हैं। ये मानते हैं कि उनका धर्म दुनिया में सबसे श्रेष्ठ धर्म है। वहां रहकर भी ये लोग मानते हैं कि ट्विन टावर्स को ध्वस्त कर देने वाले आतंकवादियों ने बहुत बड़ा काम किया था। इनमें से कुछ तो यह सपना तक देखते हैं कि पश्चिम के तमाम देश मुस्लिमों से भर गए हैं और यह पृथ्वी सिर्फ मुस्लिमों के लिए है। बांग्लादेशियों की नई पीढ़ी में अमेरिका जाने की इच्छा प्रबल है। यही नहीं, ये लोग अपने देश से बाहर यह बताने में भी कतराते हैं कि उनके माता-पिता बांग्लादेशी हैं। दूसरी ओर, अपने घर में कट्टरवादियों द्वारा लगातार ब्रेनवॉश किए जाने के कारण कुछ लोग अपने धर्म को श्रेष्ठ समझने लगते हैं। इस तरह के भटके हुए लोग दूसरे देशों के मुस्लिमों को अपना समझने की गलती कर डालते हैं। हालांकि दूसरी तरफ यह भी सच है कि अमेरिका में पैदा हुई पीढ़ी के अनेक बच्चे बांग्ला में बातचीत करते हैं, बांग्ला गीत गाते हैं। हालांकि यह इस पर निर्भर करता है कि इन बच्चों के माता-पिता घर में बांग्ला संस्कृति को कितना प्रोत्साहित करते हैं।

अनिवासी बांग्लादेशियों ने अमेरिका के विभिनन्‍ शहरों में छोटे-छोटे बांग्लादेश बना लिए हैं। पश्चिम उनके जीवन-यापन और सोच-विचार में किसी प्रकार का बदलाव नहीं ला पाया है। अमेरिका में रह रहे बांग्लादेशी अब भी जात-पांत, अंधविश्वास और कठोर पुरुषतंत्री सोच में जकड़ा हुआ है। इनके अपने देश में नारी विरोध का जो इतिहास है, उसे ये बांग्लादेशी बंगाल की खाड़ी के किनारे से अटलांटिक और प्रशांत महासागर के किनारे तक ढोकर ले आए हैं। अनिवासी नागरिक शायद ऐसे ही होते हैं। जिस मिट्टी से वे आते हैं, आजीवन उसी मिट्टी से जुड़े रहते हैं। विदेशी संस्कृति से वे वस्तुतः उतना ही ग्रहण करते हैं, जितना उनके रोजगार के लिए जरूरी होता है। लेकिन सोच-विचार की दरिद्रता से मुक्ति पाने के लिए जिस दर्शन की जरूरत होती है, उसे वे कभी जान-सीख-अपना नहीं सकते। वे आजीवन सिर्फ उसी पर चर्चा करते हैं, जो अपने देश से सीखकर आए होते हैं। मैं यह नहीं कह रही कि न्यूयॉर्क में बांग्ला साहित्य और संस्कृति के कर्णधारों ने सिर्फ मुझे ही प्रतिबंधित किया। हो सकता है, और भी लेखकों-कवियों-संस्कृतिकमिन्‍यों को उन्होंने प्रतिबंधित किया हो, और भविष्य में भी करते रहेंगे। और वहां आमंत्रित कवियों-लेखकों ने न तो इस प्रतिबंध के विरोध में कुछ कहा, न भविष्य में कुछ कहेंगे। धारा के विरुद्ध चलने वाले या अलग विचार रखने वालों की उपेक्षा करते हुए बांग्ला पुस्तक मेला इसी तरह सालोंसाल आयोजित होते रहेंगे। इसी कारण मैं कहती हूं कि बांग्लादेश और अमेरिका में भले ही फर्क हो, लेकिन इन जगहों में रहने वाले बांग्लादेशियों में आपको कोई अंतर नहीं दिखेगा। जिस तरह ढाका में होने वाले पुस्तक मेले में मेरा प्रवेश प्रतिबंधित है, ठीक उसी तरह न्यूयॉर्क में होने वाले पुस्तक मेले में भी मुझे प्रतिबंधित किया जाता है। सात समुद्र पार बस जाने के बावजूद संकुचित बंगाली संकुचित ही रह जाता है।

भूमि पर रेंगती मौत है मरुस्थलीकरण, लाखों लोगों की आजीविका छीन रही यह वास्तविकता

दुनिया भर के कई क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण एक कठोर वास्तविकता बन गया है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका को खतरा है।भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण, और सूखा प्रतिरोधकता। इस महत्वपूर्ण और चुनौती भरे विषय पर केंद्रित इस वर्ष का विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।?इसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र को कम?करने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व की अनुभूति होती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित जितने भी अंतरराष्ट्रीय दिवस हैं, उनमें पर्यावरण दिवस ऐसा है, जिसे उत्साह और चिंतन के साथ मनाया जाता है। हमारे ग्रह के भूमि संसाधनों के लिए मरुस्थलीकरण सबसे घातक खतरों में से एक है, जो चुपचाप पारिस्थितिक तंत्र, जैव योगदान करते हैं, जिससे मरुस्थलीकरण का प्रसार बढ़ता है। मरुस्थलीकरण प्राकृतिक और मानवीय?दोनों प्रणालियों को प्रभावित करते हैं। इससे पारिस्थितिक तंत्रों में जैव विविधता की हानि, मिट्टी की उर्वरता में कमी तथा सूखे और वनों की आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं की एक अटूट श्रृंखला शुरू हो जाती है। दुनिया को कम करना है। पुनर्वनीकरण और वनीकरण की पहल मरू भूमि को बहाल करने और मरुस्थलीकरण को कम करने, वन्यजीवों के लिए आवश्यक आवास प्रदान करने और कार्बन पृथक्करण लाभ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृषि वानिकी, संरक्षण कृषि और एकीकृत जल प्रबंधन जैसी टिकाऊ कृषि प्रथाएं

कन्वेंशन टू कॉम्बैट डेजर्टीफिकेशन (यूएनसीसीडी) की पाटिन्‍यों का 16वां सम्मेलन रियाद में 2 से 13 दिसंबर तक होना है। इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में विश्व को भूमि की सुरक्षा व जलवायु परिवर्तन के सामने मरुस्थलीकरण और सूखे से उत्पनन्‍ चुनौतियों का सामना करने के लिए कार्यवाही की तत्काल आवश्यकता को पहचानने का आह्वान किया गया है। मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता व आजीविका के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं, जिससे पारिस्थितिक रूप से सुदृढ़ भूमि प्रबंधन प्रथाओं को अपनाना अनिवार्य हो जाता है। प्रत्येक बीते वर्ष के साथ, इन चुनौतियों से निपटने की तात्कालिकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है, जिससे हमें उनके प्रभाव विविधता और आजीविका पर अतिक्रमण कर रहा है। मरुस्थलीकरण वास्तव में भूमि पर रेंगती मौत है। एक बार यह जिस भूखंड पर रेंग जाता है, वह भूमि का मृत हिस्सा बनकर रह जाता है, वहां की मिट्टी सांस नहीं ले सकती, वहां कोई पौधा नहीं पनप सकता, वहां जीवन की खाद्य श्रृंखला टूट जाती है। मरुस्थलीकरण कोई यकायक घटी प्रलयंकारी घटना नहीं, वरन भूमि क्षरण की क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें वनस्पति की हानि, मिट्टी का क्षरण और जल संसाधनों की कमी सम्मिलित है। यह शुष्क, अर्ध शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में होता है, जहां जलवायु परिवर्तन और अस्थिर भूमि प्रबंधन प्रथाएं और शहरीकरण भूमि के क्षरण में भर के कई क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण एक कठोर वास्तविकता बन गया है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका को खतरा है और सतत विकास के प्रयास कमजोर हो रहे हैं। विशेष रूप से अफ्रीका में विशाल भूमि मरुस्थलीकरण की निरंतर प्रगति का शिकार हो रही है। मरुस्थलीकरण की गंभीर वास्तविकताओं के बीच कार्यवाही के लिए आशा और अवसर उपलब्ध हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इस गंभीर चुनौती से निपटने के लिए एकजुट होकर काम करने का प्रयास किया है। 1994 में अपनाया गया यूएनसीसीडी?इस दिशा में एक ऐतिहासिक समझौता है, जिसका उद्देश्य स्थायी भूमि प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से मरुस्थलीकरण का मुकाबला करना और सूखे के प्रभावों मिट्टी की उर्वरता में सुधार लाने, सूखे के प्रति लचीलापन बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने में योगदान करती हैं। स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना?प्रभावी मरुस्थलीकरण शमन रणनीतियों का आवश्यक घटक है। निणन्‍य लेने की प्रक्रियाओं और क्षमता निर्माण गतिविधियों में स्वदेशी समुदायों व छोटे किसानों सहित स्थानीय हितधारकों को सम्मिलित करके, हम विशिष्ट समाधानों को लागू करने के लिए पारंपरिक ज्ञान और विशेषज्ञता का उपयोग कर सकते हैं, जो मरुस्थलीकरण के मूल कारण का निराकरण करते हैं। मरुस्थलीकरण के विरुद्ध लड़ाई ऐसी नहीं है, जिसे रातोंरात जीता जा सके, बल्कि ठोस प्रयास, दृढ़ संकल्प और नवीनता के साथ हम धरा पर रेंगती मौत को मात दे सकते हैं।

दीदी सब पर भारी, पश्चिम बंगाल में तृणमूल के सामने नाकाम हुई भाजपा की रणनीति

सीएए के संबंध में झूठ बोलकर और मुस्लिमों को एकजुट कर ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में भाजपा की रणनीति को नाकाम कर दिया। बंगाल में एक बार फिर ममता बनर्जी ने राजनीतिक समझ और कुटिलता की छौंक वाली चतुराई के बूते भाजपा को पछाड़ दिया। बंगाल में चुनाव विशेषज्ञ और एग्जिट पोल कराने वाली कंपनियों के पंडितों के अनुमान धरे रह गए। इसलिए चुनावी राजनीति में हवा और हकीकत के बीच की अदृश्य

रेखा को केवल वोटिंग मशीनें खुलने के बाद ही देखना चाहिए। इस चुनाव में तृणमूल को पिछली बार से सात ज्यादा यानी 29 सीटें मिली हैं, जबकि 2019 में 18 लोकसभा सीटों पर कब्जा करने वाली भाजपा के सिर्फ 12 सांसद ही दिल्ली जाएंगे। तृणमूल को पिछली बार के 43.5 प्रतिशत के मुकाबले 45.33 प्रतिशत वोट मिले हैं, जबकि भाजपा 2019 के 40.69 प्रतिशत की जगह 38.73 फीसदी वोट हासिल कर सकी। वामदल छह प्रतिशत वोट पाकर भी शून्य पर रहे, तो कांग्रेस की झोली में सिर्फ 4.68 फीसदी वोट और एक सीट आई। 2019 में माकपा का वोट शेयर 16.66 प्रतिशत से गिरकर 6.33 प्रतिशत पर आ गया था। सीटें न तब मिली थीं और न अब मिली हैं। ये वोट भाजपा को मिले थे, जिससे उसे 18 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। इस बार वामदल, खासकर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की अपने समर्पित वोटों के अलावा दीदी से कुछ-कुछ नाराज दिख रहे मुस्लिम समुदाय के वोटों पर भी नजर थी, पर चार चरण के चुनाव के बाद ममता की नई रणनीति से इस मंसूबे पर पानी फिर गया और मुस्लिम वोटर पूरी तरह तृणमूल के पक्ष में एकजुट हो गया। ममता ने एक अफवाह का सहारा लेते हुए भारत सेवाश्रम संघ के बंगाल प्रमुख कार्तिक महाराज के खिलाफ मोर्चा खोला कि वे अपने इलाके में तृणमूल का एजेंट नहीं बैठने देंगे। इसके साथ ही उन्होंने इस्कॉन और रामकृष्ण मिशन पर भी जुबानी हमले तेज किए, जवाब में प्रधानमंत्री मोदी व दूसरे भाजपा नेताओं ने बंगाल के सांस्कृतिक गौरव का बखान करते हुए हिंदू वोटों के ध्रुवीकरण की कोशिश की। हिंदू तो एकजुट नहीं हुए, लेकिन ममता ने इस खेल से दक्षिण बंगाल के अपने गढ़ में मुसलमानों को एकजुट कर दिया। इसका नतीजा श्रीरामपुर, हुगली, कृष्णनगर, आरामबाग जैसी सीटों पर भाजपा की हार के रूप में दिखा। पीरजादा की पार्टी आईएसएफ भी मुस्लिमों को विभाजित नहीं कर पाई। इसके अलावा, सीएए लागू होने के बाद ममता ने प्रचारित किया कि जैसे ही मतुआ समुदाय के लोग नागरिकता के लिए आवेदन करेंगे, विदेशी हो जाएंगे और उन्हें डिटेंशन कैंप में भेज दिया जाएगा। हालांकि यह एक झूठ था, जिसे बार-बार बोला गया। राज्य सरकार की तमाम योजनाओं से वंचित होने की भी बात कही गई।

संक्षिप्त समाचार

कर्नाटक सीएम के बेटे सहित ँव्झ् का ये दिग्गज नेता बना एमएलसी मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार भी हुए निर्वाचित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
बेंगलुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया का बेटा डा. यतींद्र सिद्दरमैया और पूर्व भाजपा महासचिव सीटी रवि समेत 11 उम्मीदवारों को गुरुवार को विधान परिषद के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया गया। विधानसभा सदस्यों द्वारा चुनी जाने वाली उच्च सदन की 11 सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव 13 जून को प्रस्तावित थे कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया का बेटा डा. यतींद्र सिद्दरमैया और पूर्व भाजपा महासचिव सीटी रवि समेत 11 उम्मीदवारों को गुरुवार को विधान परिषद के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया गया। विधानसभा सदस्यों द्वारा चुनी जाने वाली उच्च सदन की 11 सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव 13 जून को प्रस्तावित थे। विधानसभा सचिव और चुनाव निर्वाचन अधिकारी एमके विशालाक्षी ने कहा कि गुरुवार को नाम वापसी का आखिरी दिन था। कर्नाटक विधानसभा सचिव और चुनाव निर्वाचन अधिकारी एमके विशालाक्षी ने कहा कि गुरुवार को नाम वापसी का आखिरी दिन था। हालांकि दोपहर तीन बजे किसी उम्मीदवार ने नामांकन वापस नहीं लिया। ऐसे में 11 सीटों के लिए मैदान में उतरे 11 उम्मीदवारों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया गया। इनके अलावा कांग्रेस के आरएम आसिफ पाशा ने भी नामांकन किया था। हालांकि प्रस्तावक नहीं होने के कारण जांच के दौरान मंगलवार को उनका नामांकन रद्द कर दिया गया था। अन्य निर्वाचित उम्मीदवारों में सत्तारूढ़ कांग्रेस के बाल्कीश बानु, लघु सिंचाई मंत्री एनएस बोसराजू, सीएम के राजनीतिक सलाहकार के. गोविंदराज, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष वसंत कुमारी, पूर्व एमएलसी इवाज डिसूजा और पार्टी कलबुर्गी जिलाध्यक्ष जगदेश गुट्टेदार, भाजपा से परिषद में विपक्षी मुख्य सचेतक एन. रविकुमार, एमजी मुले और जदएस से टीएन जावाराई गौड़ा शामिल हैं।

असम की नींव बहुत कमजोर सीएम सरमा ने क्यों बताया राज्य के चुनावी परिणाम को खतरनाक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
गोआलपाड़ा (असम)। लोकसभा चुनाव 2024 (थ्दव् ऍर्स्तिमूदहींल्ू 2024) के नतीजों में असम में बीजेपी ने 14 में से 9 सीटों पर कब्जा जमाया है। बाकि बचे सीटों पर भाजपा बुरी तरह हारी है इन जिलों में शामिल है नागांव और धुबरी। इन जिलों के परिणाम को लेकर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने गुरुवार को दावा किया कि नागांव और धुबरी में

लोकसभा चुनाव के नतीजे इस बात की ओर इशारा करते हैं कि राज्य के सामाजिक ताने-बाने की नींव 'बहुत कमजोर' है।सीएम सरमा ने यहां संवाददाताओं से कहा कि नागांव और धुबरी के खतरनाक चुनाव परिणामों ने फिर साबित कर दिया है कि असम के सामाजिक ताने-बाने की नींव बहुत कमजोर है... रकीबुल हुसैन 10 लाख से अधिक वोटों से जीते। इसका क्या मतलब है? यह हमारे समाज और जातीय जीवन (राष्ट्रीय जीवन) के सामने खतरे को दर्शाता है। कांग्रेस विधायक रकीबुल हुसैन ने धुबरी सीट पर रिकॉर्ड 10 लाख से अधिक वोटों से जीत दर्ज की, जबकि पार्टी के सांसद प्रद्युत बोरदोलोई नागांव में 2,12,231 वोटों से विजयी हुए। सरमा ने यहां संवाददाताओं से कहा कि नागांव और धुबरी के खतरनाक चुनाव परिणामों ने फिर साबित कर दिया है कि असम के सामाजिक ताने-बाने की नींव बहुत कमजोर है... रकीबुल हुसैन 10 लाख से अधिक वोटों से जीते।

नोएडा प्राधिकरण के सीईओ ने श्रमिकों को खिलाया खाना, लोग हुए हैरान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। प्राधिकरण के सीईओ डा. लोकेश एम ने सेक्टर-94 लेबर चौक में सैकड़ों लोगों को भोजन वितरित किया। इस कम्युनिटी किचेन का

शुभारंभ नोएडा प्राधिकरण व इस्कॉन मंदिर के सौजन्य से किया गया है। इस दौरान 488 श्रमिकों ने भोजन ग्रहण किया। नौएडा प्राधिकरण की इस पहल की श्रमिकों द्वारा काफी सराहना की गयी। सीईओ डा. लोकेश एम गरीबों को कराया भोजन सीईओ डा. लोकेश एम ने कहा कि भविष्य में कम्युनिटी किचन का आयोजन सस्ती दरों पर नौएडा क्षेत्र के विभिनन्‍ स्थानों पर कराया जाएगा। कम्युनिटी किचन में विभिनन्‍ प्रकार के व्यंजन बनाए एवं परोसे जाएंगें। कम्युनिटी किचन में लोग अपने परिवार के साथ जन्म दिन, पुण्य तिथि एवं शादी की वर्षगांठ पर आ सकेंगें एवं अपनी इच्छानुसार इस रसोई में अपना योगदान कर सकेंगें। किचन प्रबन्धन द्वारा प्रत्येक कार्यक्रम का एक डाटाबेस बनाया जाएगा। जो लोग अनन्‍ दान के इच्छुक होंगें, वे अपना योगदान दे सकते हैं। नियत तिथि में स्वयं अथवा उनके परिवारजन आकर यहां भोजन वितरण में सहयोग कर सकते है। कार्यक्रम में ये लोग थे शामिल कार्यक्रम के दौरान नौएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम के अलावा मुख्य विधि सलाहकार आर0 पी0 गुप्ता, उप महाप्रबंधक (जन स्वास्थ्य) एस0 पी0 सिंह, उप महाप्रबन्धक (सिविल) विजय रावल, परियोजना अभियंता (जन स्वा0-7)गौरव बंसल, परियोजना अभियंता (जन स्वा0-??) आर0 के0 शर्मा, परियोजना अभियंता (वर्क सर्किल-3) राजकमल, जन स्वास्थ्य विभाग की समस्त टीम एवं मेसर्स गाइडेड फार्च्यून समिति के समस्त सदस्य उपस्थित रहे।

जीएल बजाज में फेयरवेल का आयोजन अविस्मरणीय यादों और यादगार पलों को किया याद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा स्थित जीएल बजाज कॉलेज के सीएसई और एसीएसई विभाग में फेयरवेल पार्टी का

आयोजन किया गया। बीटेक अंतिम वर्ष के छात्रों ने प्रथम वर्ष के छात्रों के साथ अपने शिक्षण काल के अनुभवों को साझा किया। और कहा कि हम लोग जीवन के अगले पड़ाव की तरफ बढ़ रहे है यह एक सुखद पल है लेकिन इस बात का दुख भी है की हम अपने जीएल बजाज परिवार और अपने अच्छे दोस्त और साथियों से विदा भी हों रहे हैं। यह एक अध्याय का अंत नहीं हैं बल्कि दूसरे की शुरुआत हैं जिसमें हम सभी अपने अच्छी यादों को लेकर जाएँगे। सीनियर छात्रों ने देर रात तक पढ़ाई करने से लेकर हंसी-मजाक वाली कक्षाओं तक, बिताया गया हर पल को याद किया। और कहा कि ये सभी पल वाकई खास होतें है। आइए बनाए गए बंधनों, सीखे गए सबक और दोस्ती को संजोएं जो जीवन भर साथ चलेगी। कॉलेज निदेशक डॉद मानस कुमार मिश्रा ने कहा कि जीएल बजाज छात्रों को उनके जीवन के नए मोड़ और रोमांच की शुभकामनाएं देता है, लेकिन हमेशा याद रखें कि जीएल बजाज में आपका हमेशा एक घर रहेगा। अंत में सभी छात्रों ने गीत संगीत, रेम्प वॉक परिधान प्रदर्शन और अंताक्षरी के आयोजन में भरपूर मस्ती की।

अग्निवीर योजना की समीक्षा के पक्ष में आई ठ्ळ, पार्टी महासचिव सीके त्यागी ने दिया बड़ा बयान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। केंद्र में सरकार गठन से पहले जदयू ने देश के दो बड़े विषयों पर अपना रुख स्पष्ट किया

है। वह सेना में भर्ती वाली अगिन्वीर योजना की समीक्षा और समान नागरिक संहिता पर सभी राज्यों से बातचीत के पक्ष में है। जदयू की अपेक्षा राष्ट्रीय स्तर पर जाति आधारित गणना कराने की भी है। केंद्र में सरकार गठन से पहले जदयू ने देश के दो बड़े विषयों पर अपना रुख स्पष्ट किया है। वह सेना में भर्ती वाली अगिन्वीर योजना की समीक्षा और समान नागरिक संहिता पर सभी राज्यों से बातचीत के पक्ष में है। जदयू की अपेक्षा राष्ट्रीय स्तर पर जाति आधारित गणना कराने की भी है। जदयू के राष्ट्रीय महासचिव केसी त्यागी ने कहा कि अगिन्वीर योजना का काफी विरोध हुआ। जदयू के राष्ट्रीय महासचिव केसी त्यागी ने कहा कि अगिन्वीर योजना का काफी विरोध हुआ। लोकसभा चुनाव में भी इसका असर देखा गया है। इसलिए इसपर फिर से विचार करने की जरूरत है। त्यागी का यह बयान भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बाद आया है। राजनाथ ने भी चुनाव प्रचार के दौरान एक जनसभा में अगिन्वीर योजना को लेकर ऐसा ही बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि अगिन्वीरों का भविष्य सुरक्षित करना सरकार का दायित्व है। फिर भी यदि जरूरत पड़ी तो हम इसमें बदलाव के लिए भी तैयार हैं। केसी त्यागी ने कहा कि मैं यह नहीं कह रहा कि इस योजना को खत्म कर देना चाहिए, लेकिन चुनाव के दौरान कांग्रेस समेत विपक्षी दलों ने अगिन्वीर योजना को बड़ा मुद्दा बनाया था।

'उनके साथ भी यही हुआ था', कंगना रनौत के सपोर्ट में उतरा ये फिल्ममेकर, इंदिरा गांधी मर्डर से की तुलना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। लोकसभा संसदीय क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के मंडी से चुनाव जीतने वालीं अभिनेत्री कंगना रनौत इस समय सुर्खियों में बनी हुई हैं। का बाजार काफी गर्म है और हर कोई इस घटना की निंदा कर रहा है। इस बीच फिल्ममेकर अशोक पंडित ने भी कंगना रनौत के साथ हुए इस दुर्व्यवहार पर आपत्ति जताई सीआईएसएफ महिला सुरक्षाकर्मी को जल्द से अरेस्ट किया जाए और उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में कोई और इस तरह से सांसद के साथ

एक दिन पहले चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर सीएसआईएफ महिला सुरक्षाकर्मी की तरफ से कंगना को गालियां दी गई और उन्हें थप्पड़ भी मारा गया। कंगना रनौत थप्पड़ कांड का मामला लगातार तूल पकड़ रहा है। राजनेताओं के अलावा अब फिल्मी सितारे भी इस घटना का आलोचन कर रहे हैं। इस बीच हिंदी सिनेमा के एक फेमस फिल्ममेकर ने कंगना के साथ हुई बदसूलकी की तुलना देश की पूर्व प्रधानमंत्री रहीं इंदिरा गांधी के मर्डर केस से कर डाली है। आइए मामले को विस्तार से समझते हैं। इस मामले को लेकर फिलहाल चर्चाओं है और उन्होंने इस बदसूलकी की तुलना पूर्व प्रधानमंत्री रहीं इंदिरा गांधी के मर्डर से कर दी है। चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर हुए कंगना रनौत के थप्पड़ कांड को लेकर अब फिल्म निर्माता अशोक पंडित ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर एक लेटेस्ट वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में अशोक कहते हैं- कंगना के साथ जो हरकत की गई है, वह बहुत गलत है। मैं इसकी कड़ी निंदा करता हूं। देश की पूर्व प्रधानमंत्री रहीं इंदिरा गांधी के साथ भी यही सलूक किया गया था। आज कंगना के साथ भी ऐसा हो रहा है। मैं चाहता हूं कि उस दुर्व्यवहार न कर सके। इस तरह से अशोक पंडित ने कंगना रनौत के सपोर्ट में अपनी बात रखी है और दोषी के खिलाफ एक्शन की मांग की है। बता दें कि बतौर फिल्ममेकर अशोक पंडित तेरा क्या होगा जॉनी, कॉपीरेट, मैं गांधी को नहीं... और शीन जैसी मूवीज बनाने के लिए जाने जाते हैं। लोकसभा चुनाव 2024 में मंडी लोकसभा सीट से जीत का परचम लहराने वालीं कंगना रनौत जल्द ही सांसद के रूप में शपथ लेंगी। बता दें कि इस चुनाव में उन्होंने कांग्रेस नेता विक्रमआदित्य सिंह को हराया है।

ऐसे चटकारे लेकर ट्रोल हीरामंडी' एक्ट्रेस शर्मिन सहगल की ट्रोलिंग पर ऋचा चड्ढा ने दिया ऐसा रिएक्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। 'हीरामंडीः द डायमंड बाजार' जब से नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है, तभी से संजय लीला भंसाली की भांजी शर्मिन सहगल को ट्रोल किया जा रहा है। सीरीज में शर्मिन ने आलमजेब का किरदार निभाया था। की रिलीज के बाद से ही शर्मिन सहगल अपने अभिनय के लिए बुरी तरह ट्रोल हो रही हैं। अब शर्मिन की ट्रोलिंग पर अभिनेत्री ऋचा चड्ढा ने रिएक्शन दिया है। हीरामंडी में लज्जो का किरदार निभाने वालीं ऋचा ने शर्मिन सहगम के बारे में बुरा कहने वालों के लिए क्या कहा है जानिए यहां हीरामंडी' में आलमजेब की भूमिका निभाने वालीं शर्मिन सहगल की परफॉर्मेंस की लोगों ने खूब आलोचना की और उन्हें एक्सप्रेशनलेस बताया। सीरीज की रिलीज के महीने बाद भी शर्मिन की ट्रोलिंग खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। अब ऋचा चड्ढा ने अपनी को-स्टार का सपोर्ट करते हुए ट्रोलर्स को खरी-खोटी सुनाई

दरअसल, ऋचा चड्ढा के एक हालिया पोस्ट पर एक यूजर ने शर्मिन सहगल के लिए एक नफरत भरा कमेंट किया था, जिसे देख एक्ट्रेस भड़क उठीं और यूजर के कमेंट का स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए लम्बा-चौड़ा नोट लिखा है। यूजर ने शर्मिन के लिए कहा था, उस शो में दोबारा कभी मत लौटना। यह खास एक भावनाहीन हैमिंग नेपो किड के लिए बनाया गया था।इस नफरत भरे कमेंट के बारे में ऋचा चड्ढा ने इंस्टाग्राम स्टोरी में कहा, ठपिछले एक महीने से मैं अपने कमेंट बॉक्स से अपनी को-स्टार के बार में किये गये नेगेटिव कमेंट्स डिलीट कर रही हैं। दोस्तों, रचनात्मक आलोचना करो लेकिन इतनी नफरत के साथ किसी की परफॉर्मेंस को अस्वीकार करना ठीक है। मत करो पसंद, आपका हक है। पर ऐसे चटकारे लेकर ट्रोल तो मत करो प्लीज। ऋचा चड्ढा ने आगे कहा, मुझे पता है कि किसी ट्रेंड में शामिल होना अच्छा लगता है, लेकिन किसी दूसरे इंसान को क्लिक बैट बनाना? मुझे लगता है कि हम सभी इससे बेहतर कर सकते हैं, इससे बेहतर हो सकते हैं। प्लीज थोड़ा दयालु बनें। यह किसी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अभी-अभी एक बड़ा चुनाव हुआ है, गर्मी की लहर चल रही है, दुनिया में बहुत कुछ चल रहा है।

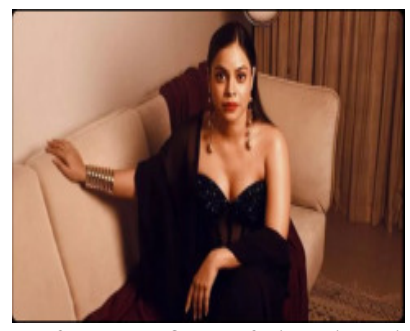

काम मांगने के लिए सुमोना चक्रवर्ती ने इंडस्ट्री के इन लोगों को किया मैसेज, बताई केकेके 14 में जाने की वजह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कुछ नया करने के लिए कई बार अपनी सहजता से बाहर निकलना पड़ता है। कामेडियन कपिल शर्मा के साथ कामेडी शो कर चुकी अभिनेत्री सुमोना चक्रवर्ती भी कुछ

ऐसे ही रास्तों पर निकल पड़ी हैं। हालांकि, जब वह कपिल के वर्तमान शो में नहीं दिखीं, तो कई सवाल भी कलर्स टीवी के फेमस रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी का आगाज होने वाला है। अभी तक इस शो को लेकर कई अपडेट सामने आते रहे हैं। अब इस शो में नजर आने वाली एक्ट्रेस सुमोना चक्रवर्ती ने अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर खुलकर बात की है। साथ ही उन्होंने इस शो का हिस्सा बनने की वजह भी बताई अब सुमोना ने बताया है कि वह कामेडी से इतर बतौर अभिनेत्री ज्यादा काम करना चाहती हैं। यही कारण है कि वह रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी 14 का हिस्सा बनी हैं। इस शो के बाद वह वह अभिनय के क्षेत्र में चुनौतीपूर्ण भूमिकाएं तलाशेंगी। उनसे हुई बातचीत के अंश। मुझे लगता है कि पीआर करवाना मेरे बस की बात ही नहीं है। मैं प्राइवेट इंसान हूं। पहले जमाने में कलाकारों को लेकर रहस्य बना रहता था। मुझे वैसा ही रहस्य अपने आसपास रखना पसंद है। (हंसते हुए) शायद मैं पुरानी सोच वाली हूं। हां, जमाने के साथ नहीं चल पाउंगी, तो आउटडेटेड हो जाऊंगी। हालांकि भागने से पहले मुझे चलना पसंद है, तो मैंने अब अपने बारे में बातें करनी शुरू की हैं कि क्या कर रही हूं, क्या नहीं। मैंने कई पाटिर्यों में देखा है कि लोग बड़ी ही आसानी से किसी निर्देशक, कास्टिंग डायरेक्टर, स्टूडियो प्रमुख के पास जाकर खुद का परिचय देकर कह देते हैं कि आपके साथ काम करना है। वह मुझसे पहले नहीं हो पाता था, लेकिन पिछले दो-तीन सालों से वह मैं भी कर रही हूं। जब नीना जी (अभिनेत्री नीना गुप्ता) ने इंटरनेट मीडिया पर काम मांगने को लेकर पोस्ट डाली थी, तब मैं सोच रही थी कि उनके स्तर का कलाकार जब काम मांग सकता है, तो मैं क्यों नहीं।

लो आ गई तारीख इस दिन उठेगा बिग बॉस ओटीटी 3 का पर्दा, अनिल कपूर का दिखा झकास अंदाज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कंट्रोवशियल रियलिटी शो 'बिग बॉस ओटीटी' अपना सीजन 3 लेकर आ रहा है, जिसकी में कंटेस्टेंट के नखरों और लड़ाई को कैसे हैंडल करेंगे। हाल ही में शो का नया प्रोमो वीडियो मेकर्स ने शेयर किया था, जिसके बाद फैंस

चर्चा पिछले कई महीनों से हो रही है। सलमान खान का कंट्रोवशियल रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी सीजन 3 प्रीमियर के लिए बिल्कुल तैयार है। इस बार फैंस इस बात से जहां दुखी हैं कि उनके पसंदीदा सलमान खान शो की मेजबानी नहीं करेंगे तो वहीं ये जानने के लिए उत्सुक भी हैं कि अनिल कपूर शो के बीच जबरदस्त एक्साइटमेंट देखने को मिली। वहीं, अब गुरुवार को मेकर्स ने फैंस को शानदार तोहफा दिया है। शो की लॉन्चिंग डेट का खुलासा कर दिया गया है। इस बार सलमान खान की जगह जाने-माने अभिनेता अनिल कपूर शो को होस्ट करते नजर आने वाले हैं। एक्टर ने बुधवार को शो के बारे में एक नया पोस्ट साझा किया था। शो की तारीख के साथ अनिल के लुक की झलक भी दिखाई गई है। बिग बॉस ओटीटी सीजन 3 जियो सिनेमा पर 21 जून से स्ट्रीम किया जाएगा। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने अनिल को इंट्रोड्यूस करवाते हुए लिखा- बिग बॉस ओटीटी 3 के नये होस्ट के रूप में अनिल कपूर को पेश करते हुए। बड़े पर्दे पर राज करने से लेकर अब बिग बॉस के घर तक, अनिल कपूर कुछ खास हैं। हौ18 की रिपोर्ट के मुताबिक, अनिल कपूर ने इस शो को लेकर कहा है कि, बिग बॉस ओटीटी और मैं एक ड्रीम टीम हैं। हम दोनों दिल से जवान हैं। लोग अक्सर कहते हैं मजाक में कि मैं रिवर्स एजिंग हूं, लेकिन बिग बॉस में ये खूबी है। ऐसा महसूस होता है जैसे स्कूल वापस जाना, कुछ नया और रोमांचक प्रयास करना। मैं बिग बॉस में उसी ऊर्जा को 10 गुना अधिक लाने जा रहा हूं। मैं इसमें अपना स्वाद लाने के लिए इंतजार नहीं कर सकता।

थ्रिल के लिए हो जाइए तैयार, इस दिन ओटीटी पर दस्तक दे रही 'मंकी मैन'

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अगर आप एक्शन थ्रिलर के शौकीन हैं और सिनेमाघरों में जाने की बजाय घर पर ही फिल्म का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो आपके लिए खुशखबरी है। दो महीने पहले

बॉक्स ऑफिस पर तूफान लाने वाली फिल्म 'मंकी मैन' ओटीटी पर दस्तक देने जा रही है। भारतीय पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्म मंकी मैन दो महीने पहले सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। सुमडॉग मिलियनेर एक्टर देव पटेल ने इस फिल्म से बतौर निर्देशक करियर शुरू किया था। सिनेमाघरों के बाद मंकी मैन ओटीटी पर दस्तक देने जा रही है। जानिए देव पटेल की फिल्म कब और कहां रिलीज हो रही है। फिल्म 'मंकी मैन' से देव पटेल ने बतौर निर्देशक अपने करियर की शुरुआत की है। भारतीय पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्म एक्शन से भरपूर है। फिल्म सिनेमाघरों में 5 अप्रैल को रिलीज हुई थी और मूवी ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा-खासा बिजनेस किया था। थिएटर रिलीज के दो महीने बाद फिल्म का ओटीटी प्रीमियर होने जा रहा है। भारतीय सितारों से सजी 'मंकी मैन' लंबे इंतजार के बाद ओटीटी पर दस्तक देने जा रही है। फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पीकॉक टीवी (ईम्दम्व् ऊ्न) पर 14 जून को स्ट्रीम होगी। वैराइटी के मुताबिक, भारत में यह फिल्म 4ख् अल्ट्रा एचडी ब्लू रे में 11 जून से डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया जाएगा। डीवीडी वर्जन में यह 25 जून को मौजूद होगी। 'मंकी मैन' दुनियाभर में 5 अप्रैल को रिलीज हुई। भारत में यह फिल्म 19 अप्रैल को आनी थी, लेकिन सिनेमाघरों में आने से पहले ही इस पर विवाद हो गया और मूवी पोस्टपोन कर दी गई। ण्ँइण् ने इस फिल्म को इसलिए हरी झंडी नहीं दी, क्योंकि मूवी में ज्यादा हिंसा, इंटीमेट सीन, हिंदू धर्म और पौराणिक कथाओं के बारे में बताया गया था।

कर्नाटक में बैन हुई अन्नू कपूर की हमारे बारह मेकर्स को लगा एक और बड़ा झटका

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अन्नू कपूर और परितोष त्रिपाठी स्टारर फिल्म 'हमारे बारह' के पोस्टर और टीजर जब से कहा कि इसमें ऐसा कुछ नहीं है। अब इसे लेकर कर्नाटक सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। बीते दिन खबर आई कि बॉम्बे हाई कोर्ट ने

रिलीज हुए हैं, तब से यह मूवी सुर्खियों में बनी हुई है। फिल्म को लेकर चल रहा विवाद कम होने का नाम नहीं ले रहा है अन्नू कपूर स्टारर फिल्म हमारे बाहर काफी समय से सुर्खियों में चल रही है। इस फिल्म को लेकर विवाद है कि यह मूवी किसी एक समुदाय विशेष पर निशाना साधने वाली फिल्म है। हालांकि इसके मेकर्स और स्टार्स इस बात से इंकार कर चुके हैं और 14 जून तक फिल्म की रिलीज को टाल दिया है। वहीं, अब कर्नाटक सरकार ने भी फिल्म 'हमारे बारह' को लेकर एक बड़ा फैसला लिया है, जिससे सुनने के बाद मेकर्स को झटका लग सकता है। जनसंख्या वृद्धि के मुद्दे की कहानी पर बनी इस फिल्म को लेकर काफी समय से विवाद चल रहा है। कुछ लोग इसे एक समुदाय विशेष पर निशाना साधने वाली फिल्म बता रहे हैं। हालांकि, इसके मेकर्स और टीम कई बार इस पर सफाई दे चुके हैं कि इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है। अब इसे लेकर कर्नाटक सरकार ने भी बड़ा फैसला लिया है। दरअसल, एएनआई के ट्वीट के अनुसार, कर्नाटक सिनेमा (विनियमन) अधिनियम, 1964 की धाराओं के तहत कर्नाटक सरकार ने फिल्म 'हमारे बारह' के रिलीज या प्रसारण पर दो सप्ताह या अगले आदेश तक रोक लगा दी है। सरकार का कहना है कि अगर इसे राज्य में रिलीज होने दिया गया तो इससे सांप्रदायिक तनाव पैदा होगा। कर्नाटक सरकार ने यह फैसला टीजर देखने के बाद कई अल्पसंख्यक संगठनों और प्रतिनिधिमंडलों के अनुरोध पर लिया है। बता दें कि यह मूवी आज यानी 7 जून को रिलीज होने वाली थी, लेकिन बॉम्बे हाई कोर्ट ने बुधवार को फिल्म की रिलीज 14 जून 2024 तक टाल दिया। ऐसे में अब यह मूवी एक हफ्ते बाद रिलीज हो सकती है। इससे पहले यह खबर सामने आई थी कि फिल्म की कास्ट को जान से मारने की धमकियां भी मिल रही हैं। इस मामले में अन्नू कपूर ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से मुलाकात भी की थी।

सलीम खान संग शादी के खिलाफ था सलमा का परिवार, 10 साल तक रही दूरी, सालों बाद सलमान खान के पिता ने तोड़ी चुप्पी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अभिनेता, लेखक और प्रोड्यूसर सलीम खान (ऐंत्स् र्खेह) ने अपनी जिंदगी में दो शादियां की हैं। उनकी पहली शादी सुशीला चरक (सलमा) और दूसरी शादी हेलन से की है। हाल ही में, वह अपने बेटे अरबाज खान के द इनविन्सिबल्स टॉक शो में आये और सलमा के साथ अपनी डेटिंग और अंतरधार्मिक शादी के बारे में बात की।ने साल 1964 में सलमा (ऐंर्त्से) के साथ अंतरधार्मिक शादी किया था। इससे पहले दोनों ने सालों तक डेटिंग की। एक हालिया इंटरव्यू में सलीम खान ने अंतरधार्मिक शादी पर चुप्पी तोड़ी है। सलमान खान के पिता ने बताया कि वह सलमा से डेटिंग से पहले उनके माता-पिता से भी मिले थे। जानिए फिर उनके पैरेंट्स का क्या रिएक्शन था। सलीम खान ने साल 1964 में सुशीला के साथ शादी की थी, जिन्होंने बाद में अपना नाम सलमा कर लिया था। फिर दूसरी शादी 1981 में हेलन से की। सलीम को पांच बच्चे हैं- सलमान खान (ऐंर्त्सेह र्खेह), अरबाज खान, सोहेल खान, अलवीरा खान और अर्पिता खान। अरबाज खान के साथ चैट शो में सलीम खान ने बताया कि सलमा के साथ डेटिंग करना आसान नहीं था। वह सलमा के साथ रिलेशनशिप में रहने से पहले उनके माता-पिता से मिले और उन्हें अपने रिश्ते के बारे में बताया। सलमान खान के पिता ने कहा- सलीम खान ने आगे बताया कि उनके रिलेशनशिप में सबसे बड़ा रोड़ा धर्म था। सलमा के पिता उन्हें पसंद तो आये, लेकिन उनकी सिर्फ एक चिंता थी, वह अलग धर्म था। मगर सलमान खान के पिता ने उन्हें भरोसा दिलाया कि उनके रिश्ते में कभी भी धर्म समस्या नहीं बनेगी। सलीम खान ने कहा- सलीम खान और सलमा खान ने बाद में कोर्ट मैरिज कर ली, लेकिन इससे सलमान के नाना बिल्कुल भी खुश नहीं थे। वह न उनकी शादी में आये और ना ही उनसे 10 साल तक मिले। इस बारे में सलीम खान ने कहा, ठवह पहली बार तब आये जब सोहेल का जन्म हुआ। उन्हें बस हमें देखा और चले गये।करीब 17 साल बाद सलीम खान ने दूसरी शादी की। हालांकि, सलमा खान ने अपनी सौतन को भी स्वीकार किया। लेखक ने कहा कि सलमा पहली शख्स थीं, जिन्होंने हेलन को अपनाया था।

राहुल गांधी ने शाह रुख खान से मांगी थी नेताओं के लिए सलाह, किंग खान का जवाब सुनकर सब रह गए थे हैरान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। शाह रुख खान 90 के दशक के बेहतरीन स्टार्स में से एक हैं। आज भी वह अपनी फिल्मों और अदाकारी के जरिए फैंस के दिलों में राज करते हैं। किंग खान के चाहने वाले उनकी तस्वीरों से लेकर नए-पुराने वीडियो तक पर खूब प्यार लुटाते हैं। अब ऐसा ही उनका एक वीडियो खूब वायरल हो रहा है, जिसमें वह पॉलिटिशियन्स को सलाह देते हुए नजर आ रहे हैं। शाह रुख खान बॉलीवुड के बेहतरीन स्टार्स में से एक हैं। सिर्फ देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी उनकी अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है। अब हाल ही में किंग खान का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें राहुल गांधी उनसे नेताओं को लेकर सलाह मांगते हुए नजर आ रहे हैं। इसके बाद किंग खान जो जवाब देते हैं उसे सुनकर हर कोई हैरान हो गया। दरअसल, हाल ही में लोकसभा चुनाव के नतीजे आए हैं और इसी के बाद उनका यह वीडियो काफी वायरल हो रहा है, जिसमें राहुल गांधी, शाह रुख खान से सवाल करते हैं कि नेताओं के लिए पॉलिटिशियन्स को वह क्या सलाह देंगे। इस सवाल का किंग खान जो जवाब देते हैं वह उनकी राजनीतिक ईमानदारी पर विचारों की एक झलक भी दिखाता है। वीडियो को देखने से लग रहा है कि यह किसी इवेंट का है, जिसमें काफी सारे लोग मौजूद हैं और साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भी दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में राहुल के सवाल का जवाब देते हुए शाह रुख थोड़ा नर्वस नजर आते हैं और कहते हैं कि देखो तुमने किससे पूछा है। झूठ बोलना, धोखा देना मेरे काम का हिस्सा है, इसे मैं जीविका के लिए करता हूं। मै एक्टर हूं। इसके बाद शाह रुख कहते हैं कि काम करते हुए मन में ईमानदारी होनी चाहिए। देश पर गर्व के साथ काम करें और टेबल के नीचे से घूस न ले। अगर हम यह सब सही तरीके से करते हैं, तो हम सब पैसे कमाएंगे और खुश रहेंगे। साथ ही हम महान और गौरवशाली राष्ट्र बनेंगे। इसलिए सभी राजनेताओं को मेरी सलाह है, जितना हो ईमानदार रहें। किंग खान की यह बात सुनकर इवेंट में मौजूद हर शख्स उनकी तारीफ करने लगा और ताली बजाने लगा। सिर्फ इतना ही नहीं, वीडियो के कमेंट सेक्शन पर भी कई लोगों ने किंग खान की बात की तारीफ की।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि. 1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं आधुनिक समाचार पब्लिसिंग हाउस सी 41 यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज 211010 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।